Prabha
प्रभा

The Prabha Khaitan Foundation Chronicle

PRABHA KHAITAN FOUNDATION
अपनी भाषा अपने लोग

SPECIAL EDITION | Issue 55

आखर उत्सव

बिहार | गुजरात | महाराष्ट्र | उत्तर प्रदेश | बंगाल

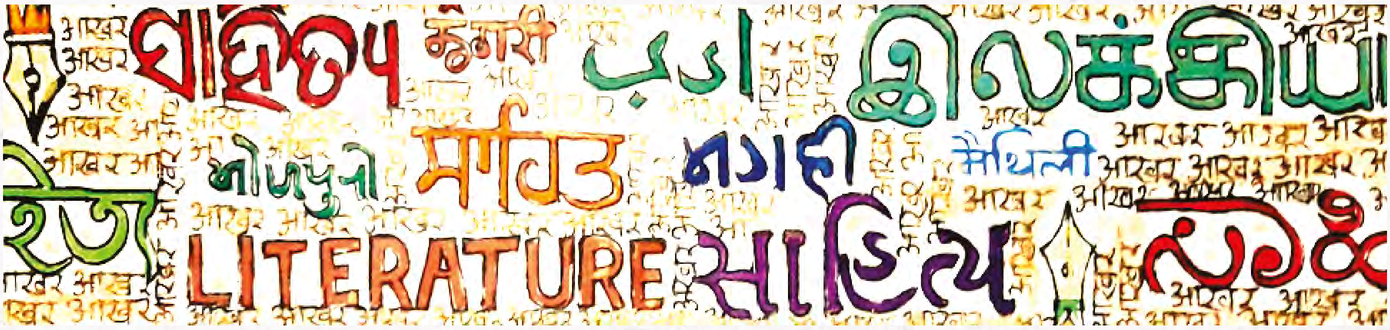

ARTWORK BY **SUDIPTA KUNDU**

PRABHA KHAITAN FOUNDATION
अपनी भाषा अपने लोग

MANISHA JAIN
Honorary COO,
Prabha Khaitan Foundation

बोलियों की मिठास व लोक संस्कृति के गौरवबोध का पर्व 'आखर महोत्सव'

भारत की सांस्कृतिक विरासत समृद्धि का प्रतीक है। **आखर महोत्सव** इसी सांस्कृतिक विरासत और विविध बोलियों में रची बसी मिठास का गौरवबोध करवाने वाला पर्व है। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** का मिशन हमेशा से भारत की समृद्ध विरासत, लोक कला, संस्कृति और साहित्य को बढ़ावा देने के साथ ही उसे संरक्षित करना रहा है। इसी उद्देश्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताते हुए फाउंडेशन लगातार कई वर्षों से कार्यरत है। फाउंडेशन का मानना है कि संस्कृति और विरासत किसी भी समाज की आधारशिला हैं, जो पहचान, निरंतरता और एकता की भावना प्रदान करती हैं। हमें भारत की सांस्कृतिक संपदा की असंख्य अभिव्यक्तियों के लिए एक माध्यम होने का बहुत गर्व है। उन्हें अग्रिम पंक्ति में लाने का हमारा प्रयास यह सुनिश्चित करता है कि हमारी विरासत भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित बनी रहे।

हमारी बुनियादी पहलों में से एक क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देना और संस्कृतियों को सुरक्षित, संरक्षित करना है, जो पूरे भारत में समुदायों की विशिष्ट पहचान की रक्षा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रत्येक भाषा अपने भीतर समाज के मानवीय मूल्यों, उनकी कथाओं, परंपराओं को अपने में संजोए रखती है। इसे पहचानते हुए हमने क्षेत्रीय साहित्य का उत्सव मनाने और उसे पुनर्जीवित करने के लिए समर्पित पहल के रूप में **'आखर'** की शुरुआत की। **'आखर'** ने न केवल क्षेत्रीय लेखकों को अपना साहित्य प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान किया बल्कि एक साहित्यिक क्रांति भी शुरू की है। इसने क्षेत्रीय आख्यानों को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाया है और हमारे राष्ट्र को समृद्ध बनाने वाली भाषाई विविधता के लिए नए सिरे से सराहना को बढ़ावा दिया है।

पिछले एक साल में **'आखर'** के तत्वावधान में फाउंडेशन ने विभिन्न भाषाओं, बोलियों और समुदायों के साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदानों का उत्सव मनाया है। कई कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और प्रकाशनों के माध्यम से हमने भाषाई विरासत को संरक्षित करने और स्थानीय लेखकों का समर्थन करने के महत्त्व पर जोर दिया है। इस पहल ने व्यापक प्रशंसा प्राप्त की है और हमें क्षेत्रीय साहित्य को अग्रिम श्रेणी में लाने के अपने प्रयासों पर गर्व बोध है।

प्रभा के इस संस्करण में हमने अपना ध्यान भारत के चार राज्यों – बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात की जीवंत कला, संस्कृति और साहित्य पर केंद्रित किया है। इनमें से प्रत्येक राज्य अपने इतिहास, परंपरा और कलात्मक प्रतिभा के धागों से बुने गए एक समृद्ध सांस्कृतिक ताने–बाने को खुद में समेटे हुए है। बिहार की भावपूर्ण कविता और उत्तर प्रदेश के शास्त्रीय नृत्य रूपों से लेकर महाराष्ट्र के लोक संगीत व नृत्य और गुजरात के जटिल शिल्प तक यह संस्करण इन क्षेत्रों को परिभाषित करने वाली अनूठी सांस्कृतिक पहचानों का उत्सव है।

हमें उम्मीद है कि यह संस्करण न केवल इन राज्यों की सांस्कृतिक संपदा की एक अंतर्दृष्टिपूर्ण झलक प्रदान करता है, बल्कि विविध विरासत के लिए गहरी प्रशंसा को भी प्रेरित करता है जो भारत को वास्तव में अद्वितीय बनाता है। प्रत्येक लेख, साक्षात्कार और फीचर हमारी क्षेत्रीय संस्कृतियों की स्थायी भावना और उनके द्वारा सन्निहित असीम रचनात्मकता का प्रमाण है।

आप इन पृष्ठों में साझा की गई कथाओं और उनके पीछे की अंतर्दृष्टि में डूब सकते हैं. हम आपको कला, संस्कृति और साहित्य का जश्न मनाने वाले इस उत्सव में हमारे साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं जो हमारे राष्ट्र के दिल और आत्मा का निर्माण करते हैं। भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने की हमारी यात्रा का हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद। इस सौन्दर्य को पढ़ने का आनंद लें और इसे अपने आस–पास की समृद्ध विरासत का पता लगाने और उसे संजोने के लिए प्रेरित करें।

Manisha Jain

अस्वीकरण: *प्रभा में व्यक्त विचार और नजरिया लेखकों के अपने हैं. ये फाउंडेशन के विचारों और नजरिए का प्रतिनिधित्व नहीं करते.*

प्रभा में कई आलेख अंग्रेजी और अन्य भाषाओं से अनूदित हैं. भावानुवाद में हुए परिवर्तनों का विधिक दायित्व फाउंडेशन नहीं उठाता है. यहां व्यक्त विचार और नजरिया लेखकों के अपने हैं. ये फाउंडेशन के विचारों और नजरिए का प्रतिनिधित्व नहीं करते.

Prabha
प्रभा

आखर
अपनी भाषा अपने लोग

बिहार

The late Usha Kiran Khan, the Hon'ble Governor of Bihar, Rajendra Vishwanath Arlekar, and Anant Vijay light the inaugural lamp as Anvita Pradhan and Anubha Arya look on

मातृभाषा को लेकर हीनता और अन्य भाषाओं को लेकर कटुता का भाव न हो: राज्यपाल

आखर — जिनसे बनी शब्दों की दुनिया और हमारी भाषाएं। भाषाएं, जो हैं हमारी अभिव्यक्ति का सबसे सहज और सशक्त माध्यम। इनसे ही हम जुड़ते हैं, अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धरोहर, मूल्यों और परम्परा से। **प्रभा खेतान फाउंडेशन 'आखर'** में **अपनी भाषा, अपनी बोली** और स्थानीय साहित्य का उत्सव मनाता है। इसके तहत फाउंडेशन स्थानीय भाषाओं, बोलियों में शामिल लोक, उसकी समृद्धि, परंपरा और सांस्कृतिक जड़ों का पता लगाते हुए साहित्य की सच्ची आत्मा को संजोता है।

आखर — उन भारतीय लेखकों, कलाकारों, संस्कृतिकर्मियों को बढ़ावा देता है, जो स्थानीय भाषाओं में लिखते हैं, गुनगुनाते हैं, गाते हैं, धुन बनाते हैं और थिरकते हैं। **'आखर'** के तहत **प्रभा खेतान फाउंडेशन** ओड़िआ, पंजाबी, भोजपुरी, मैथिली, मगही, अवधी, तमिल, कन्नड़, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषाओं के लेखकों और कवियों की मेजबानी करता रहा है और इसका दायरा लगातार बढ़ रहा है। इसी क्रम में बिहार की भाषाओं और साहित्य पर आधारित **'आखर बिहार उत्सव –२०२३'** आयोजित हुआ। इस उत्सव का शुभारंभ बिहार के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने दीप प्रज्वलित कर किया।

आर्लेकर ने अपने वक्तव्य में कहा कि भाषा विज्ञानियों के मतानुसार हर बारह कोस पर भाषा बदल जाती है। यह बात हर प्रदेश की भाषाओं पर लागू होता है। बिहार में अलग–अलग भाषाओं की एक समृद्ध परंपरा रही है। उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा को लेकर हमारे अंदर कोई हीनता का भाव नहीं होना चाहिए बल्कि गर्व होना चाहिए। साथ ही अन्य भाषाओं को लेकर हमारे अंदर कोई कटुता भी नहीं होनी चाहिए। हमें सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए और एक–दूसरे से सीखना चाहिए।

Ratneshwar Singh

आर्लेकर ने बतौर गोवा विधानसभा अध्यक्ष अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि मैंने अंग्रेज़ी की जगह कोंकणी में विधानसभा के कामकाज को बढ़ावा दिया, जिसका शुरुआत में काफ़ी विरोध हुआ लेकिन बाद में इसके सकारात्मक बदलाव देखने को मिले। बच्चों और युवाओं में किताबें पढ़ने के घटते चलन पर चिंता जताते हुए उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी में पुस्तक पढ़ने की आदत डालने की जिम्मेदारी भी हमारी है। माता–पिता, अभिभावकों, साहित्यकर्मियों सहित सभी ज़िम्मेदार व्यक्तियों को इसे बढ़ावा देने की ज़रूरत है। हमें अपने बच्चों को पाठ्य–पुस्तकों के इतर विभिन्न विषयों पर साहित्यिक पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और इसके लिए एक व्यापक अभियान चलाने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार उषाकिरण खान ने प्रख्यात लेखिका प्रभा खेतान से जुड़ी स्मृतियों को याद करते हुए कहा कि

प्रभा खेतान फाउंडेशन के ज़रिए युवा पीढ़ी को अपनी बोली-भाषा से जोड़ने का काम बखूबी हो रहा है। उन्होंने वाचिक परंपरा का हवाला देते हुए कहा कि हमारी मातृभाषा को आगे बढ़ाने में इसका बहुत योगदान है। हालांकि इन भाषाओं में लिखित साहित्य की कमी है, जिसे दूर किया जाना आवश्यक है।

राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित लेखक अनंत विजय ने कहा कि हिंदी का विकास विभिन्न भाषा-बोलियों से मिल कर हुआ है। बिहार में बोली जाने वाली सभी बोलियों-भाषाओं का समुच्चय हिंदी है। जो भाषा आपको आती है और जिसमें आप सहज हैं, उसी को प्रयोग में लाना चाहिए। आज हिंदी विलाप की नहीं बल्कि विकास की भाषा है। प्लासी की लड़ाई के बाद अंग्रेजों ने धर्म और भाषा के अध्ययन पर ज़ोर दिया और **'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया'** की शुरुआत की। लेकिन इसके तहत केवल हिंदी और अरबी-उर्दू पर फोकस करने की वजह से अन्य भाषाओं के साथ अन्याय हुआ। उन्होंने भाषा के विकास में आर्थिक प्रगति एवं राजनीतिक शक्ति की भूमिका को भी रेखांकित किया।

लेखक व पत्रकार रत्नेश्वर ने कहा कि बिहार समेत भारत में प्रचलित विभिन्न बोलियों-भाषाओं को, जो विलुप्ति के कगार पर हैं, उनका संरक्षण एवं संवर्धन जरूरी है। भारतीय भाषाओं के उत्सव **'आखर बिहार उत्सव २०२३'** के अवसर पर **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की अनिंदिता चटर्जी, अन्विता प्रधान, अनुभा आर्या के साथ अनेक भाषाविद और साहित्य प्रेमी मौजूद रहे।

आखर *— उन भारतीय लेखकों, कलाकारों, संस्कृतिकर्मियों को बढ़ावा देता है, जो स्थानीय भाषाओं में लिखते हैं, गुनगुनाते हैं, गाते हैं, धुन बनाते हैं और थिरकते हैं।*

Anindita Chatterjee

Priyanshi Patel

Bhavna Shekhar

Jai Prakash

Gaurav Girija Shukla

Soumitra Mitra

Veena Kumari

अन्य भाषाओं की तुलना में प्रकाशन की दृष्टि से मैथिली समृद्ध

बिहार की भाषाओं में प्रकाशन' सत्र के दौरान बेहद रोचक परिचर्चा हुई। इस सत्र में मैथिली साहित्यकार अजित आजाद ने कहा कि मैथिली भाषा में दो अख़बार निकलते हैं। बिहार की अन्य भाषाओं में इसका अभाव है। मैथिली में बाक़ी भाषाओं की तुलना में बहुत ज़्यादा प्रकाशक हैं और व्यवस्थित ढंग से किताबें प्रकाशित की जा रही हैं। राम नरेश शर्मा ने कहा कि बज्जिका भाषा में लिखने वालों की कमी के कारण बहुत कम किताबें छप रही हैं। मगही के जयनन्दन सिंह ने भी सत्र में अपने विचार रखे। प्रशांत रंजन इस सत्र के वार्ताकार थे।

> "मैथिली में बाक़ी भाषाओं की तुलना में बहुत ज़्यादा प्रकाशक हैं"

Jai Nandan Singh

Ajit Azad

Ram Naresh Sharma

Prashant Ranjan

हमारी भाषाई विरासत समृद्ध, पर इस ओर ध्यान आवश्यक

आखर बिहार उत्सव में **'बिहार की भाषा, उपलब्धियां और चुनौतियां'** विषय पर परिचर्चा हुई। दिलीप कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मगही सभी भाषाओं की जननी है। हमारी मांग है कि सरकार मगही को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करे। बज्जिका के विद्वान रणवीर कुमार राजन ने कहा कि बज्जिका लिच्छवी गणतंत्र की भाषा है। पहले से ही इसके साथ नाइंसाफी हुई है।

भोजपुरी कवि प्रकाश उदय ने कहा कि सरकार की उदासीनता के बावजूद भोजपुरी में साहित्य की सभी विधाओं का सृजन हो रहा है। मैथिली के विद्वान रमेश मोहन शर्मा ने कहा कि मैथिली भाषा की बहुत सारी उपलब्धियां हैं। साहित्य में गद्य लेखन, कविता, एकांकी आदि विविध विधाओं में बड़ी संख्या में बेहतरीन ग्रंथ व पुस्तकें लिखी गई हैं। रंगमंच से लेकर मिथिला पेंटिंग का भी मैथिली भाषा के विकास में बहुत योगदान रहा है। कार्यक्रम का संचालन सुप्रसिद्ध पत्रकार निराला बिदेसिया ने किया।

> "रंगमंच से लेकर मिथिला पेंटिंग का भी मैथिली भाषा के विकास में बहुत योगदान रहा है।"

Dilip Kumar

Ramesh Mohan Sharma Aatmavishwas

Kamal Mohan Chunnu

Nirala Bidesia

Anvita Pradhan

Ranweer Ranjan

Uday Prakash

मातृभाषा में बच्चों को शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक

आखर उत्सव के भाषा आधारित तीसरे सत्र में **'बिहार की भाषाओं में शिक्षा'** विषय पर अरुणा चौधरी, दिवाकर पांडेय, किरण कुमारी शर्मा, प्रदीप प्रभात और संजय पकंज के साथ दिव्या गौतम ने संवाद किया। इस अवसर पर संजय पंकज ने कहा कि सरकारी स्कूलों में आरंभिक शिक्षा के दौरान अगर कोई विद्यार्थी खड़ी बोली में बात करता था, तो शिक्षक से उसे झिड़की खानी पड़ती थी। दिवाकर पांडेय ने कहा कि माता की गोद में बच्चा जो भाषा सीखता है, वही मातृभाषा है। मगध विश्वविद्यालय में मगही भाषा की प्राध्यापक किरण कुमारी शर्मा ने कहा कि बिहार की हर क्षेत्रीय भाषा की स्थिति अलग-अलग है। प्रदीप प्रभात ने कहा कि मातृभाषा में बच्चों को शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है।

> माता की गोद में बच्चा जो भाषा सीखता है, वही मातृभाषा है।

Sanjay Pankaj

Pradeep Prabhat

Divya Gautam

Kiran Kumari Sharma

Diwakar Pandey

Aruna Choudhary

लोक भाषा में फिल्म बनाने के लिए निर्माताओं में मजबूत इच्छा-शक्ति आवश्यक

बिहार की भाषा और साहित्य उत्सव के चौथे सत्र में '**बिहार की भाषाओं में सिनेमा**' विषय पर रत्नाकर कुमार, मिथिलेश कुमार सिंह, संजीव पूनम मिश्रा के साथ कुमार विमलेंदु सिंह ने बातचीत की। इस दौरान फिल्म निर्माता रत्नाकर कुमार ने कहा कि क्षेत्रीय भाषा या लोक भाषाओं की फिल्म बनाने के लिए फिल्म निर्माताओं के अंदर मजबूत इच्छा-शक्ति का होना नितांत आवश्यक है। **आखर** जैसे कार्यक्रम का आयोजन लोक भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए जरूरी है। किसी भी बदलाव के लिए पहले खुद बदलना होगा, उसके बाद अपने लोगों को बताना होगा। इसके लिए हमें मेहनत करनी होगी। बिहार की भाषाई फिल्मों के लिए दुखद यह रहा कि बॉलीवुड के किसी बिहारी कलाकार से समर्थन नहीं मिला। अभी मेरी नौ फिल्मों की घोषणा हुई है, जिसमें एक भोजपुरी है, बाकी मैंने उन फिल्मों की घोषणा की जो घरों में आम बोलचाल की भाषा है।

> "चाहे हमारी मातृभाषा अलग-अलग हो और हम दूसरी भाषाओं का अर्थ भले न समझें, लेकिन हम उसका भाव ज़रूर समझते हैं।"

मगही सिनेमा से जुड़े मिथिलेश कुमार सिंह ने कहा कि चाहे हमारी मातृभाषा अलग-अलग हो और हम दूसरी भाषाओं का अर्थ भले न समझें, लेकिन हम उसका भाव ज़रूर समझते हैं। प्रख्यात फिल्मकार सत्यजीत रे की बांग्ला फ़िल्म *'अभिजात'* में हिंदी फ़िल्मों की प्रसिद्ध अभिनेत्री ने मगही भाषी किरदार निभाया था। फिर वर्ष १९६४ में आई मगही फ़िल्म *'भैया'* बिहार की क्षेत्रीय भाषा में बनी पहली फ़िल्म थी। इसी से प्रेरणा लेकर जाने-माने अभिनेता नाज़िर हुसैन ने पहली भोजपुरी फ़िल्म *'गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो'* का निर्माण किया। वर्तमान में भी मगही में फ़िल्में बन रही हैं, लेकिन उनकी संख्या कम है। मैथिली अभिनेता संजीव कुमार मिश्रा ने कहा कि मैथिली भाषा में फ़िल्म निर्माण साठ के दशक में शुरू हुआ। लेकिन मैथिली सिनेमा में निरंतरता एक समस्या है। बेशक़ संख्या के लिहाज़ से मैथिली फ़िल्में कम बनी हैं, लेकिन जितनी भी बनी हैं कंटेंट के स्तर पर काफ़ी बेहतर हैं। मैथिली सिनेमा में असीम संभावनाएं हैं और इसे और एक्सप्लोर करने की ज़रूरत है।

Ratnakar Kumar, Mithilesh Kumar Singh, Anubha Arya, Sanjeev Kumar and Kumar Vimlendu Singh

लोकगीतों की मनभावन प्रस्तुति

आखर बिहार उत्सव २०२३' में उद्घाटन सत्र के बाद भोजपुरी, मगही और मैथिली भाषा के लोक कलाकारों ने लोक गीतों की मनभावन प्रस्तुति दी। सबसे पहले गोलू म्यूज़िक टीम ने पारंपरिक भोजपुरी लोक गीत प्रस्तुत किये। लोक गायकों – नन्दलाल राम, आशुतोष यादव एवं शैलेन्द्र शर्मा के समूह ने अपने सुरीले गायन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

> लोकगीतों ने बांधा समा

'पुरबिया सम्राट' महेंदर मिसिर की रचनाओं से लेकर विलुप्त प्राय 'हुड़का' वाद्य यंत्र पर कलाकारों के गायन–वादन को काफ़ी पसंद किया गया। विनय कुमार और उनकी टीम ने मगही लोक गीत पेश किये तो गांव की यादें ताजा हो गईं। कार्यक्रम के अंत में मा झा ने अपनी टीम के साथ एक से बढ़कर एक मैथिली लोक गीत गाये । इस दौरान उन्होंने मिथिला अंचल के सुप्रसिद्ध लोक गीतों के साथ भगवान राम के विवाह के कई गीतों का मधुर गायन भी किया।

The audience

Folk singers perform Bhojpuri songs

Folk musicians perform in Maithili

एक सत्र कविता के नाम

आखर द्वारा आयोजित कविता कार्यक्रम में कविता कामिनी (मैथिली), गंगानाथ झा (मैथिली), नेहा नूपुर (भोजपुरी), गुलरेज़ शहज़ाद (भोजपुरी), प्रवीण परिमल (मगही), अशोक समदर्शी (मगही), श्रीकांत व्यास (अंगिका), ब्रह्मदेव कुमार (अंगिका), विद्या चौधरी (बज्जिका), अखौरी चंद्रशेखर (बज्जिका) में कविता पाठ किया।

> काव्य पाठ में निखरा लोक रंग

Ganganath Jha, Kamini, Neha Nupur, Gulrez Shahzad, Pravin Parimal and Ashok Samdarshi

Shrikant Vyas, Bhramdev Kumar, Vidya Choudhury and Akhauri Chandrasekhar

शारदा सिन्हा ने समापन सत्र में भरा लोकसंगीत का रंग

प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा आयोजित '**आखर बिहार उत्सव**' का समापन समारोह सुप्रसिद्ध लोक गायिका शारदा सिन्हा के नाम रहा। सिन्हा ने अपनी गायिकी से श्रोताओं को गंवई लोक-रस से सराबोर कर दिया। सिन्हा ने **आखर बिहार उत्सव** कार्यक्रम करने के लिए **प्रभा खेतान फाउंडेशन** का आभार व्यक्त किया और कहा कि **आखर** के कार्यक्रम में आकर मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अपने आंगन में आ गई हूं। उन्होंने सबसे पहले मां भगवती को याद करते हुए *'जगदम्बा घर में दियरा बार अइनी हो...काले के शिव के मनाई हो शिव मानत नाही'* को गाना शुरू किया तो पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस अवसर पर सिन्हा के साथ गायन में बंदना भारद्वाज सहित अन्य साथी मौजूद रहे।

> "कार्यक्रम में आकर मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अपने आंगन में आ गई हूं।"

Sharda Sinha

Anuba Arya

Sharda Sinha performs with her troupe

Vandhana and Sharda Sinha

Anant Vijay

मिट्टी की सौंधी खुशबू लोक गीतों व लोक भाषाओं में महकती रहती है। ऐसी ही सुगन्धित लोक संस्कृति से रूबरू होने का अवसर **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से **आखर** बिहार उत्सव में मिला। इस आयोजन में उपस्थित अतिथियों, कलाकारों के लिए ये अविस्मरणीय अनुभव था। इस दो दिवसीय विशेष उत्सव के बाद आयोजकों की ओर से रात्रिभोज का आयोजन मन को लुभाने वाला रहा। इसमें भी स्थानीय संस्कृति की झलक नजर आई। सौहार्द और प्रेम के साथ ही रात्रि भोजन एक अनूठे अपनत्व के साथ सम्पन्न हुआ।

Brajkishore Sinha and Anshuman Sinha

Ratneshwar Singh

Anvita Pradhan and Gaurav Girija Shukla

Prabha
प्रभा

आखर
अपनी भाषा अपने लोग

गुजरात

सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव का उत्सव

भाषा मानवीय भावों को स्वाभाविक, प्रत्यक्ष और सरल तरीके से अभिव्यक्त करने का माध्यम है। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** और *कर्मा फाउंडेशन* ने अहमदाबाद के स्पोर्ट्स क्लब में **'आखर गुजरात महोत्सव'** का आयोजन किया। भाषा का यह उत्सव इसीलिए संजोया गया कि गुजरात अपनी विरासत, इतिहास, साहित्य, कला, शिक्षा, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों तथा परंपराओं का उत्सव तो मनाए ही युवा पीढ़ी आसानी से इनसे जुड़ सकें।

'आखर गुजरात महोत्सव' के बहाने से गुजराती साहित्य, कला, संस्कृति, स्थानीय बोलियों को और अधिक समृद्ध होने का अवसर मिला। इस साहित्य महोत्सव का मुख्य उद्देश्य गुजरात की विभिन्न भाषाओं और साहित्य को उचित मंच देना था। यह पहल भाषा के महत्त्व को रेखांकित करती है और भविष्य में सभी निवासियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने का अवसर प्रदान करेगी।

Joravarsinh Jadav, Dwarkeshlalji Maharajshri and Priyanshi Patel light the inaugural lamp

चिंतन का गुलदस्ता

आखर गुजरात महोत्सव' की शुरुआत गुजराती साहित्य और संस्कृति के संक्षिप्त स्वरूप के दर्शन के साथ हुई। इसके बाद सम्मानित अतिथियों द्वारकेश लाल महाराजजी, चिरंजीव पटेल, प्रियांशी पटेल, शनील पारेख, पद्मश्री से सम्मानित जोरावरसिंह जादव, डॉ विष्णु पंड्या और अब्दुल गफूर खत्री द्वारा दीप-प्रज्वलन किया गया। शनील पारेख ने **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी और **अहसास** वूमेन के सहयोग पर प्रकाश डाला। सभी वक्ताओं ने अपनी अंतर्दृष्टि से व्यक्त विविध विचारों से जैसे चिंतन का बेहतरीन गुलदस्ता प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में भरत बारिया और अक्षय पटेल ने ऊर्जावान प्रदर्शन के साथ दर्शकों को अपनी कलात्मक प्रतिभा और गतिशीलता से मंत्रमुग्ध कर दिया।

Vishnu Pandya

Shaneel Parekh

Chiranjeev Patel

Abdul Gafur Khatri

आदिवासी पंचमहाल नृत्य

टिमली: ढोल संग पांव की थिरकन

कहा जाता है कि अभी भी हजारों गांव हैं जो सभ्यता और संस्कृति से दूर हैं। सही अर्थों में यही लोग धरतीपुत्र हैं, जनजाति जंगल के वासी हैं। उनका जीवन उनके जंगल के बीच बने घर, पेड़ों की छांव तले, खुली हवा में सांस लेते बलखाती नदी की तरह बहता है। फिर भी वह मुट्ठी भर ज़मीन पर खेती करके पेट भरता है, विकट परिस्थिति में जीता है। उसे कोई शिकायत नहीं है और न ही किसी से फरियाद करता है। इन वनवासियों की जमीन को हड़पने के लिए जब अंग्रेज आए तो उन्होंने अपने जीवन को दांव पर लगाया, पाल चित्तलिया इसका गवाह है। गोविंद गुरु ने इन वनवासियों का नेतृत्व किया। लूनावाडा का किला इसका गवाह है, जहां ५००० भीलों ने अंग्रेजों को तीर-कमान लेकर घेर लिया था। और हां, इनकी जरूरतें बहुत कम, इतनी सी कि बस गुजारा हो जाये। ये छोटे-मोटे वाद्य यंत्रों के साथ नाचते हैं, उत्सव मनाते हैं। ज्यों ही ढोल बजा नहीं कि इनके पांव थिरकने लगते हैं और तब प्रकट होती है टिमली नृत्य की टोली। भारत बरिया और अक्षय पटेल टिमली में न केवल गाते हैं, बल्कि गाने भी लिखते हैं।

Bharat Bariya

गरबो: सांस्कृतिक पहचान

यह हमारे लिए गर्व की बात है कि गरबा को हमारी विरासत में स्थान मिला है। अभी गरबा विश्व-विख्यात हो गया है। गरबा की प्रस्तुति-संस्कृति, संगीत और नृत्य का सुंदर मिला-जुला रूप है। इसके लिए हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने गरबा को हमारी संस्कृति के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई। गरबा के रूप में हमारी संस्कृति को मान्यता मिलना एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करेगा। हमें इस संकल्प को साकार करने के लिए संयुक्त और गंभीर रूप से प्रयासरत रहना होगा। विश्व प्रसिद्ध कलाकार और गुजरात के गौरव भरत बारिया, अक्षय पटेल और नृत्यावली के कलाकारों द्वारा गरबा प्रस्तुत किया गया।

Akshay Patel

श्रीराम उत्सव नृत्य नाटिका: समर्पण का भाव

भारत वासियों के लिए बड़े गर्व की बात है कि लगभग ५०० वर्षों के बाद भगवान श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव को अयोध्या में आयोजित किया गया। इसी अवसर की याद में विश्व प्रसिद्ध कलाकार और गुजरात के गौरव भरत बारिया, अक्षय पटेल और नृत्यावली कलाकारों द्वारा **श्रीराम उत्सव नृत्य नाटिका** प्रस्तुत की गयी। इस नृत्य नाटिका में भारतीय संस्कृति के वैभव और जीवंतता को दर्शाया गया। संगीत, नृत्य, और कला के माध्यम से इस महोत्सव में हर कोने से प्रेम, समर्पण और समरसता की भावना प्रकट होने लगी।

Priyanshi Patel, Joravarsinh Jadav and Shaneel Parekh

लोककला के निर्भूत सौंदर्य का आनंद लेने का अद्वितीय अवसर

आखर गुजरात: हर सत्र, अपने आपमें पूर्ण, भूले –बिसरे लोक साहित्य एवं लोक कला से पूर्ण', **गुजरात साहित्य महोत्सव** के पहले सत्र में पद्मश्री से सम्मानित जोरावरसिंह जादव ने ऐसे रोचक अंदाज़ में अपनी बात शुरू की तो ऐसा लगा मानों भूली–बिसरी लोक–कलाओं और लोक–कथाओं के सुंदर जहाज़ को पतवार मिल गयी हो।

सत्र की शुरुआत में ही जादव ने सभी को एक दोहे — *"दो मिले, चार दिखे, चौंसठ खिलें, बीस कर जोड़, हृदय से हृदय मिले और खिले सात करोड़"* के माध्यम से लोक–साहित्य की अनगिनत सृष्टियों को संयुक्त रूप से एक साथ देखने की प्रेरणा दी। इस काव्यमय अभिव्यक्ति ने सत्र में उनके महत्त्व को रेखांकित कर दिया ।

उन्होंने अपनी शैली में बताया कि कैसे वह स्वयं को लोककला का एक यात्री मानते हैं और इस यात्रा के दौरान उन्होंने किस प्रकार से भूली हुई लोक–कलाओं और लोक–कथाओं की तह तक अपनी पैठ बनाई।

लोथल के संग्रहालय में रखे टूटे हुए मृदा भांडों के चित्रों के माध्यम से उन्होंने लोककथाओं के इतिहास और प्राचीनता की बात की। उन्होंने दर्शाया कि कैसे ये टूटे मिट्टी के पात्र वास्तविकता की खोज में लोगों को ले जा सकते हैं और हमें भूली हुई सांस्कृतिक स्रोत का पता लगाने में मदद कर सकते हैं।

सिंह जादव ने बजनिया, नट, मदारी आदि लोक कलाओं के बारे में जब बोलना शुरू किया तो अपनी भावनाओं और अन्तर्दृष्टि से मूर्त और अमूर्त संस्कृति की धारा में सभी को भिगो दिया। अपने लोक कला संगठन के माध्यम से कैसे वे भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोक कलाकारों को प्रोत्साहित कर रहे हैं, उन्होंने इसे भी बताया। उन्होंने कालबेलिया नर्तकी गुलाबो के उदाहरण से इस महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया तथा भारत की विविधता पूर्ण सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और विकास पर भी जोर दिया। उन्होंने बताया कि एक वचन ने कैसे उनके जीवन की धारा मोड़ दी और वे खुद लोककला और लोक–संस्कृति के प्रति समर्पित हो गए।

बचपन और जवानी के दिनों की यादों को जीवंत करते हुए उन्होंने बताया कि कैसे उन्हें अपने पिताजी के गुस्से का भी सामना करना पड़ा। उन्होंने यह सभी बातें बहुत ही हास्य भरे अंदाज़ में साझा की।

सत्र के अंत में, उन्होंने दर्शकों को सौराष्ट्र के काठियावाड़ी राजदरबारों के शानदार आतिथ्य के बारे में बताकर अचंभित किया । सिंह जादव ने यह भी बताया कि कैसे उन्होंने काठियावाड़ी व्यंजनों का आनंद लिया, और उसमें से एक विशेष व्यंजन *'सात पाणीनो रोटलो'* ने उन्हें विशेष रूप से प्रभावित किया। उन्होंने बताया कि कैसे खास तरीके से तैयार किए जाने वाले भोजन ने भूली हुई प्राचीन भोजन परंपरा को पुन: प्रकट किया।

सिंह जादव ने कहा कि हमें अपनी रूचि और अपनी संस्कृति के प्रति गर्व महसूस करना चाहिए। इस सत्र के माध्यम से हमें लोक–साहित्य और लोककला के निर्भूत सौंदर्य का आनंद लेने का अद्वितीय अवसर मिला, जो हमारी संस्कृति को और भी समृद्ध करने में मदद कर सकता है। यह सत्र निश्चित रूप से हमारे सांस्कृतिक धरोहर के महत्त्व को अनुभव कराने में सफल रहा है और इसे सबके लिए सहज और सुलभ बना रहा है।

गुजराती फिल्मों का कल, आज और कल

साहित्य महोत्सव के दूसरे सत्र में विजयगिरी बाबा और हितेन कुमार ने **'गुजराती फिल्मों का कल, आज और कल'** विषय पर चर्चा की, जिससे गुजराती फिल्मों का संसार श्रोताओं के समक्ष थोड़ा और खुला। इस सत्र में गुजराती सिनेमा में व्याप्त उठापटक का भी जिक्र हुआ, तो गुजराती फिल्म इंडस्ट्री की महत्त्वपूर्ण बातें भी सामने आईं।

सत्र की शुरुआत में बाबा ने गुजराती फिल्मों के इतिहास यात्रा की एक सुंदर झलक पेश की। उन्होंने कुछ ऐसी बातें भी बताईं, जिनसे आज भी लोग अनजान हैं। कुमार ने इस यात्रा को रूपांतरित करने में अपने योगदान के बारे में बताया, जिससे उन्होंने गुजराती सिनेमा को नए आयाम दिए हैं।

उन फिल्मी निर्देशकों और कलाकारों के इतिहास को जानकर, जिन्होंने अपने योगदान से गुजराती सिनेमा को एक नये मुक़ाम तक पहुंचाया है, सब लोगों को अच्छा लगा। उन्होंने दिखाया कि गुजराती फिल्मों का इतिहास सिर्फ एक संख्या नहीं है, बल्कि इसमें रंग-बिरंगी कहानियों की भरमार है जो लोगों की भाषा में बोलती हैं।

चर्चा के दौरान एक महत्त्वपूर्ण पहलू पर जोर दिया गया, वह था कि फिल्में सिर्फ रिकॉर्ड बनाने के लिए नहीं बनतीं, बल्कि उनमें भी एक सामाजिक संदेश होना चाहिए और उन्हें दर्शकों को प्रेरित करना चाहिए। गुजराती फिल्मों को इस ओर बढ़ने के लिए नई दिशा देने की आवश्यकता है, ताकि यह कला और साहित्य का सार्थक साधन बन सके।

इसके अलावा, सत्र में फिल्मों के विषयों पर भी गहराई से चर्चा की। गुजराती फिल्में आगे कैसे बढ़ सकती हैं, इसके लिए कौन-कौन से कदम उठाए जा सकते हैं और फिल्मों का कौन-कौन सा संदेश होना चाहिए? इस पर भी विचार किया गया।

इस सत्र के अंत में, गुजराती फिल्मों के नजरिए पर चर्चा हुई, जिससे स्पष्ट हुआ कि भविष्य में गुजराती सिनेमा का योगदान कैसे और बढ़ाया जा सकता है। सरकार पर भी कुछ हास-परिहास की बातें हुईं। उन्होंने सिनेमा उद्योग को बढ़ाने के समर्थन में भी सुझाव दिया।

फिल्म निर्माण में सांस्कृतिक और सामाजिक संदेशों का किस तरह से समावेश किया जा सकता है, इस सत्र ने यह सार्थक दृष्टि प्रदान की । गुजराती फिल्मों का भविष्य उज्ज्वल है और इसे और भी समृद्धि की ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए इस दिशा में काम करना होगा, बाबा और कुमार की चर्चा ने गुजराती सिनेमा के साथी और समर्थकों को इसके लिए प्रेरित किया।

Hiten Kumar, Vijaygiri Bava and Aasit Shah

स्मरण: गुजराती जीवन शैली का आह्वान

Ravi Maru

स्मरण एक अनूठा प्रयास है, जो हमारे दैनिक जीवन और संगीत के बीच की दूरी को कम करता है। साथ ही, गुजरात के ग्राम्य लोक संगीत की महक को नगरवासियों तक पहुंचाता है। इसका उद्देश्य लोक परंपराओं और सांस्कृतिक विविधता को व्यापक श्रोताओं तक पहुंचाना है। इन गीतों में ग्राम्य जीवन की महक है जो साधु संतों के सादगी भरे जीवन से रास ग्रहण करती है और समुदाय के मस्ती भरे आलम को दर्शाती है। यह हमारे अस्तित्व की जड़ों तक पहुंचने का प्रयास करता है। गुजराती जीवन का उत्सव सादगी और जीवंतता है। यह भूली हुई उस सरगम की याद दिलाता है जो हृदय को झंकृत कर, गुजराती जीवन शैली का आह्वान करे।

Milan Rathod

Alpesh Baladhiya

चारणी साहित्य: गहरी अंतर्दृष्टि से उद्भव

आधुनिक भारतीय साहित्य महोत्सव के तीसरे सत्र को चारणी साहित्य को समर्पित किया गया और इस सत्र ने एक नए दृष्टिकोण से साहित्य की दुनिया को छूने का प्रयास किया। प्रमुख वक्ताओं में प्रो. तीर्थंकर रोहडिया ने चारणी साहित्य की उत्पत्ति, परंपरा, और इसकी भाषा के पीछे छुपे रहस्यों को उद्घाटित किया।

चारण और उनकी भाषा का समझना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन प्रो. रोहडिया ने इसे सुलझाने का प्रयास किया और दर्शकों को इस अद्वितीय साहित्य की विशेषता को समझाने में मदद की। उन्होंने बताया कि चारणी साहित्य का उद्भव गहरी अंतर्दृष्टि से हुआ है और फिर यह समृद्ध और विकसित हुआ है।

सत्र में आगे बढ़ते हुए वसंत गढ़वी ने चारणी साहित्यकारों और कवियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने तीर्थंकर भाई को श्रद्धांजलि अर्पित की। सत्यवादी चारणों की विशिष्टताओं की बात करते हुए, उन्होंने उनके अद्भुत योगदान को सराहा और इस साहित्य की अमूल्य संस्कृति को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

सत्र का एक और महत्त्वपूर्ण हिस्सा कुणाल व्होरा का था, जिन्होंने *'चारण चोथो वेद'* दोहा के माध्यम से चारणी साहित्य की खास बातें बताईं। उन्होंने समर्थ लोककथाकार बचुभाई गढ़वी के बारे में भी विवरण दिया और उनके द्वारा साहित्य के क्षेत्र में किए गए योगदान को सराहा।

चारणी साहित्य का प्रस्तुतिकरण और विश्लेषण से भरा यह सत्र श्रोताओं को साहित्य के उस दौर में ले गया, जिसे उन्होंने सोचा नहीं था। इस सत्र में उपस्थित युवा श्रोताओं की उत्सुकता और सत्र के प्रमुख वक्ताओं के बीच हुई संवादमयी चर्चा ने इसे और भी रोचक बना दिया।

इस सत्र की एक बड़ी विशेषता यह भी थी कि यह चारणी साहित्य को समर्थन और समझाने का एक सुदृढ़ संदेश दे रहा था।

Tirthankar Rohadia, Vasant Gadhavi and Kunal Vohra

संत साहित्य की परंपरा: अर्थपूर्ण प्रस्तुति, प्रेरक सत्र

आधुनिक भारतीय साहित्य महोत्सव के चौथे सत्र में संत साहित्य की परंपरा पर दलपत भाई पड़ियार ने अपने विचारों को सुन्दर और अर्थपूर्ण प्रस्तुति दी। इस सत्र में चार संतों और उनके साहित्यिक योगदानों को जानकर लोगों के मन में आदर और समर्पण का भाव पैदा हुआ।

पड़ियार ने संत साहित्य की परंपरा को समझाते हुए कहा कि यह एक अद्वितीय और अमूल्य धरोहर है, जो आज भी हमें आत्मा के मार्ग पर चलने की राह बताती है। उन्होंने बताया कि संतों के जीवन, भजन और सिद्धांतों के माध्यम से लोगों के जीवन को महत्त्वपूर्ण दिशा मिल सकती है।

पड़ियार ने संत साहित्य की परंपरा का अध्ययन करते समय उनके साहित्यिक और धार्मिक सृजन को समझने का प्रयास किया। उन्होंने संत साहित्य के चमत्कारी संतों त्रिकम साहेब, दासी जीवण, सतगुरु मोरार साहेब, और संत रवि साहेब के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को साझा किया। उन्होंने कहा कि संत साहित्य विशेष रूप से एक साधक के लिए अंतरात्मा के साथ साक्षात्कार करने का माध्यम है। संत साहित्य के माध्यम से व्यक्ति साधना, भक्ति और सेवा तीनों से जुड़ता है और इनके माध्यम से अपने जीवन को दिशा देना सीख सकता है। उन्होंने आपसी समझदारी, शांति, और समर्पण की भावना से संत साहित्य को स्वीकार करने की आवश्यकता पर बल दिया।

संत साहित्य की परंपरा के महत्त्वपूर्ण स्त्रोतों का परिचय कराने के साथ–साथ पड़ियार ने सत्र के दौरान संत साहित्य की शिक्षाओं और सिद्धांतों को समझाने के लिए सुंदर और रूचिकर भजनों का सुमधुर स्वर में गायन भी किया। इससे दर्शकों को संत साहित्य की महत्त्वपूर्ण बातें सुनने में अधिक रुचि हुई।

यह सत्र निश्चित रूप से एक महत्त्वपूर्ण संवाद का माध्यम बना, जिससे संत साहित्य की अद्वितीयता और उसके अद्भुत सिद्धांतों को समझने में सहायता मिली। पड़ियार के आध्यात्मिक ज्ञान और आदर्शपूर्ण प्रस्तुति ने सत्र को एक यादगार और महत्त्वपूर्ण अवसर बना दिया।

Dalpat Padhiar and Kosha Chandaria

कच्छ: साहित्य, कला और विरासत के पहलू

पांचवें सत्र में साहित्य महोत्सव ने कच्छ के साहित्य, कला और विरासत के समृद्ध पहलुओं को साझा करने का मौका प्रदान किया। कच्छ के दो प्रमुख विद्वानों मावजी महेश्वरी और डॉ. कांति गोर ने इस क्षेत्र की विशेषताओं को विस्तार से प्रस्तुत किया।

सत्र की शुरुआत में डॉ. कांति गोर ने कच्छ के रीति-रिवाजों और नाट्यकलाओं की विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने दर्शकों को एक अनूठे पहलू से रूबरू कराया, जो कच्छ साहित्य की भूमि में उगा है। उन्होंने कच्छ की लोक भाषा और विभिन्न रीति-रिवाजों के बारे में जानकारी दी, जिससे दर्शक एक अद्वितीय सांस्कृतिक पहलू से अवगत हुए।

महेश्वरी ने ढोल परंपरा के माध्यम से कच्छ की धरोहर को विस्तार से प्रस्तुत किया। ढोल जो सामान्यत: एक संगीत वाद्य है पर कच्छी और पश्चिमी संस्कृति दोनों में विशेष स्थान रखता है। मावजी ने बताया कि कच्छ के विभिन्न क्षेत्रों में ढोल को कैसे बजाया जाता है और इसकी विविधता को कैसे बनाए रखा जाता है। इससे दर्शकों को कच्छ की संगीत परंपरा के रोचक पहलुओं को जानने का मौका मिला।

कुणाल व्होरा ने सत्र की शुरुआत ही उत्साह और भव्यता के साथ की और लोगों को कच्छ साहित्य के महत्त्व का अहसास कराया। उन्होंने कच्छ की पौराणिक कहानियों, लोकगाथाओं और कला की वैभवशाली विरासत को उजागर किया। दोनों महानुभावों ने सत्र को एक नए ऊंचाई तक पहुंचाया।

Kanti Gor and Mavji Maheswari

गर्व से कहो, गुजराती मेरी भाषा है

गुजराती भाषा के महत्त्व को उजागर करने वाले एक और उत्कृष्ट सत्र में विचारक मयूर चौहान, किरीट गोस्वामी और दृष्टि सोनी ने अपने विचार साझा किए। **'गर्व से कहो कि मेरी भाषा गुजराती है'**— यह नारा ही सत्र की आधारभूत बात थी, जिसने सभी को गुजराती भाषा के प्रति आत्मगौरव बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

चौहान ने गुजराती भाषा को लेकर अपने दृष्टिकोण को साझा किया और कहा, "मुझे गर्व है कि मेरी भाषा गुजराती है।" उन्होंने इसे अपनी व्यक्तिगत और सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा माना और यह बताया कि भाषा केवल शब्दों का संग्रह नहीं होती, बल्कि यह एक संस्कृति, ऐतिहासिक गाथा और लोक जीवन का परिचय है।

गोस्वामी ने भी इस विषय पर अपने विचार साझा किए और कहा, "मातृभाषा का झंडा लेकर घूमने वाले, उसे बचाने वाले हम हैं।" उन्होंने गुजराती भाषा को अपनी पहचान का एक सकारात्मक हिस्सा माना और यह बताया कि भाषा को सीखने और सिखाने का महत्त्व है।

दृष्टि सोनी ने भी इस सम्मेलन में भाग लेते हुए अपने विचार साझा किए और गुजराती भाषा को आत्मप्रशिक्षण और स्वाभिमान का स्रोत माना। उन्होंने युवाओं को गुजराती भाषा के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने का सुझाव दिया और इसे अपनी भविष्य की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी माना।

इस सत्र में न केवल गुजराती भाषा के महत्त्व को उजागर किया, बल्कि उसे बचाने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर जिम्मेदारी लेने की बात की गई। युवा पीढ़ी को अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति गर्व महसूस करने के लिए प्रेरित करने वाले इस सत्र ने एक सकारात्मक संदेश साझा किया।

Kishan Kalyani, Mayur Chauhan, Kirit Goswami and Drashti Soni

अगर रहा चमन तो फूल खिलते रहेंगे...

कविवर गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित और राष्ट्रीय स्तर के मशहूर कवि जवेरचंद मेघाणी द्वारा अनूदित लोक गीत *'मोरबनी थन घाट करे'* को जैसे ही अभय सिंह राठौड़ ने गाना शुरू किया उपस्थित श्रोता झूमने को मजबूर हो गए। यह गीत साकामेथी स्टूडियो में १९८३ में रिकॉर्ड किया गया था और तुरंत ही विश्व भर में यह लोकप्रिय हो गया। राठौड़ ने इसके बाद तो जैसे लोक गीतों की झड़ी लगा दी। उन्होंने *'चाँद उगयो चौकमां'*, *'जोबनीयु आज आव्यू'*, *'पापी रे'* और अंत में *'कसुम्बी नो रंग'* आदि गीत गाये। आखिरी में उन्होंने धन्यवाद के साथ यह कहकर पूर्ण विराम दिया कि... *'अगर रहा चमन तो फूल खिलते रहेंगे और रही ज़िंदगी तो हम तुम मिलते रहेंगे।'*

Abhesinh Rathod performs with his troupe

Prabha
प्रभा

आखर
अपनी भाषा अपने लोग

महाराष्ट्र

संस्कृति, भाषा और सामाजिक परिवर्तन की कहानी

किसी भी समाज, राष्ट्र और सभ्यता के विकास में भाषा, कला, संगीत, संस्कृति की सबसे बड़ी भूमिका होती है। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** मानता है कि इनका माध्यम **'लोक'** है, जो स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों से बनता है। इसलिए फाउंडेशन **'अपनी भाषा, अपने लोग'** की सोच पर बल देने के साथ ही अपनी माटी में रची बसी बोलियों, भाषाओं, साहित्य, संस्कृति, संगीत, शिक्षा, कला और सिनेमा को बढ़ावा देने के लिए **'आखर'** नामक कार्यक्रम संचालित करता है। इसी कड़ी में नागपुर के चिटनवीस केंद्र में **आखर महाराष्ट्र महोत्सव** का आयोजन हुआ।

यह मराठी भाषा और संस्कृति से जुड़ा एक महत्त्वपूर्ण अवसर था। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** ने स्थानीय संस्कृति, भाषा, कला और कलाकार को समर्पित इस विशेष दिवस का आयोजन किया था। इस महोत्सव की परिकल्पना फाउंडेशन की राजस्थान और मध्य भारत की मानद संयोजक अपरा कुच्छल ने की थी। कुच्छल ने अपने अनुभव से भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पित इस महोत्सव के हर सत्र व कार्यक्रम को इस तरीके से रचा था कि इसका हर पहलू अविस्मरणीय हो गया।

अहसास वूमेन नागपुर ज्योतिका कपूर, परवीन तुली, मोनिका भगवागर और प्रियंका कोठारी के सहयोग से आयोजित महोत्सव के उद्घाटन समारोह में मेजर जनरल संजय कुमार विद्यार्थी और पूर्व मंत्री और विधायक सुनील केदार सहित कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। अतिथियों ने कैनवास पर चमकीले रंगों से भरे ब्रश से अपनी उपस्थिति को रेखांकित किया। शहर के कलाकार मिल्ली विकमशी ने एक लाइव पेंटिंग की, जिसे बाद में पूरा किया। इस कार्यक्रम में नृत्यांगना और कोरियोग्राफर शिल्पा शाहिर द्वारा पारंपरिक महाराष्ट्रीय लावणी नृत्य का शानदार प्रदर्शन भी किया गया।

> **स्थानीय भाषाएं केवल संचार का साधन नहीं हैं; ये वही धागे हैं जो मानवीय संबंध का ताना-बाना बुनते हैं**

कुच्छल ने महोत्सव के आयोजन और उसके मूल उद्देश्यों से जुड़े व्यापक दृष्टिकोण की चर्चा की। उन्होंने लोक भाषाओं और संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए फाउंडेशन की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला और कहा, "फाउंडेशन का दृढ़ विश्वास है कि भाषा और संस्कृति मानवता को जोड़ने वाले पुल के रूप में काम करती है । हमारी ये गतिविधियां विरासत के इन अमूल्य तत्वों को संरक्षित करने और संस्कृति, कला, संगीत और शिल्प को बढ़ावा देने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं।"

याद रहे कि **प्रभा खेतान फाउंडेशन**, भारत के कोलकाता स्थित एक गैर-लाभकारी ट्रस्ट है, जो देश और दुनिया भर में भारत की साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का ब्रांड एंबेसडर है। फाउंडेशन की मार्गदर्शक डॉ प्रभा खेतान — बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं। एक उद्यमी, साहित्यकार, समाजसेवी, परोपकारी और नारीवादी के रूप में उन्होंने **'कर्म ही जीवन है'** का संदेश दिया। वे सांस्कृतिक रूप से सक्रिय और साहित्य की महान प्रेमी थीं। उन्होंने १९८० के दशक में कोलकाता शहर में **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की आधारशिला रखी, जो भारत की साहित्य और सांस्कृतिक संपदा के लिए, भाषाओं और कलाओं से अपने प्यार के लिए जाना जाता है।

फाउंडेशन पिछले चार दशकों से भारत के साहित्य और सांस्कृतिक खजाने को प्रोत्साहित करने, उसे बढ़ावा देने और संरक्षित करने की एक शानदार यात्रा कर रहा है। फाउंडेशन की साहित्यिक और सांस्कृतिक अनुभव यात्रा ने वैश्विक मानचित्र पर बेहतरीन और अद्वितीय छाप छोड़ी है, और आज यह भारत और दुनिया के पचपन से भी अधिक शहरों में अपने कार्यक्रमों के साथ मौजूद है। फाउंडेशन भारत और विश्व की बहुलवादी, बहुरंगी और बहुभाषी पहचान पर गर्व करता है।

The inaugural lamp is lit

Smita Jaykar

Apra Kuchhal

The guests and Ehsaas Women strike a pose with the painting

उसका विश्वास विश्व-लोक, बहुभाषी संस्कृति, विविधता भरे समाज, समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा, धरोहर और सभ्यता से निर्मित समस्त मानव प्रजाति के हित में है।

मेजर जनरल संजय कुमार विद्यार्थी ने अपने वक्तव्य में महाराष्ट्र के सामाजिक ताने-बाने को आकार देने में मराठी भाषा की परिवर्तनकारी शक्ति पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "मराठी भाषा और विशेष रूप से मराठी साहित्य, प्रगतिशील विचारों, प्रबुद्ध जनों और सामाजिक आंदोलनों के पथप्रदर्शक रहे हैं, जिन्होंने महत्त्वपूर्ण बदलाव की शुरुआत की है।"

सुनील केदार ने बताया कि कैसे स्थानीय भाषाएं लोगों को जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनका कहना था, "स्थानीय भाषाएं केवल संचार का साधन नहीं हैं; ये वही धागे हैं जो मानवीय संबंध का ताना-बाना बुनते हैं।" उन्होंने कहा, "ये भाषाएं समुदायों को जोड़ती हैं, समझ को बढ़ावा देती हैं और अंतरालों को पाटने के साथ-साथ लोगों को गहरे स्तर पर जुड़ने में सक्षम भी बनाती हैं।"

लोकमत के संपादक श्रीमंत माने ने नागपुर में **आखर महाराष्ट्र महोत्सव** के आयोजन को शहर के लिए एक महत्त्वपूर्ण योगदान बताया। उन्होंने कहा,"नागपुर शहर जो अपने समृद्ध सांस्कृतिक ताने-बाने और ऐतिहासिक महत्त्व के लिए जाना जाता है, **आखर महोत्सव** के लिए आदर्श मेजबान है। यह शहर हमेशा विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं का मिश्रण रहा है। इसने न केवल मराठी संस्कृति को जन्म दिया, बल्कि इसे संरक्षित और बढ़ावा देने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।" माने ने नागपुर के कलाकारों, लेखकों और सांस्कृतिक लोगों के उत्साही समूह द्वारा महोत्सव की सफलता में किये गए अमूल्य योगदान के लिए साधुवाद दिया।

आखर महाराष्ट्र महोत्सव के उद्घाटन समारोह की ये झलकियां इस महत्त्वपूर्ण और बेहद सफल आयोजन की बानगी भर हैं!

Ganesh Matkari, Ashutosh Javadekar and Dnyanesh Wakudkar

Lavni performance by Shilpa Shahir

शब्दों के माध्यम से सशक्तीकरण: मराठी साहित्य में नारीवाद

Anjali Thakur, Smita Jaykar, Mangala Godbole and Dnyanesh Wakudkar

आखर महाराष्ट्र महोत्सव का उद्घाटन सत्र '**नारीवाद: सशक्तीकरण के शब्द**' विषय को समर्पित था, जिसमें मराठी साहित्य में महिला सशक्तीकरण की भूमिका को उजागर किया गया। इस सत्र में सामाजिक जीवन के कई पहलुओं से जुड़े विख्यात दिग्गज शामिल थे, उनमें अभिनेत्री स्मिता जयकर, लेखिका मंगला गोडबोले और लेखक ज्ञानेश वाकुडकर शामिल थे। चर्चा में यह बात उभर कर आई कि मराठी साहित्य स्त्री–पुरुष की पारंपरिक और रूढ़िवादी भूमिकाओं को चुनौती देने का प्रेरक तत्त्व तो रहा ही है, यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की महिलाओं के विचारों और आकांक्षाओं के स्वर को भी सहयोग देता रहा है। वक्ताओं ने यह स्वीकार किया कि मराठी साहित्य द्वारा इतिहास में परिवर्तनकारी भूमिका का निर्वहन बखूबी किया गया है।

> **मराठी साहित्य ने निडर होकर उन सामाजिक मान्यताओं का सामना किया है, जिन्होंने महिलाओं की भूमिकाओं और आकांक्षाओं को सीमित कर दिया है।**

सत्र के दौरान यह बात सामने आई कि मराठी साहित्य ने स्त्री–पुरुष की भूमिका और रूढ़िवादी सोच के खिलाफ एक विद्रोही रूख अख्तियार किया था। मंगला गोडबोले ने कहा, "मराठी साहित्य ने निडर होकर उन सामाजिक मान्यताओं का सामना किया है, जिन्होंने महिलाओं की भूमिकाओं और आकांक्षाओं को सीमित कर दिया है।" मराठी लेखकों ने रोचक आख्यानों और सम्मोहक पात्रों के माध्यम से पाठकों के समक्ष महिलाओं के जटिल जीवन और संघर्षों की दास्तान को बहुत ही प्रभावी ढंग से पेश किया है।

चर्चा में महिलाओं के अनुभवों की विविधता पर भी जोर दिया गया और बताया गया कि कैसे मराठी साहित्य इन विविध कहानियों को प्रदर्शित करने का एक मंच रहा है। ग्रामीण परिवेश की कहानियों से लेकर शहरी महत्त्वाकांक्षा की बयानगी तक, मराठी साहित्य ने सभी पृष्ठभूमि की महिलाओं को अपनी पहचान दी और आवाज़ को बुलंद करने का अवसर भी प्रदान किया। वक्ताओं ने मराठी साहित्यिक जगत में समावेशी माहौल बनाने पर जोर दिया, जहां महिला को भी लेखक, कवि और कहानीकार बनने का अवसर मिल सके। उन्होंने लेखक बिरादरी से महिलाओं को अपनी कहानियां और वैचारिक दृष्टिकोण साझा करने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित और समर्थन करने का आग्रह किया।

वक्ताओं ने माना कि सामाजिक धारणाओं को गढ़ने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में साहित्य एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करता है। इसने उपस्थित लोगों को मराठी साहित्यिक परिदृश्य के भीतर महिलाओं के सशक्तीकरण और समावेशी चरित्र के लिए चल रहे प्रयासों में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

Nidhi Garg

Shonali Nakshine

An attendee asks a question

मराठी साहित्य में तथ्य और कल्पना का सेतु बंधन

आखर महाराष्ट्र महोत्सव का दूसरा सत्र **'ब्रिजिंग फैक्ट एंड इमेजिनेशन'** नामक विषय पर केंद्रित था, जिसमें कथा साहित्य और कथेतर के अंतर्संबंधों पर गहन मंथन सामने आया। लेखिका शीतल ढगे ने लेखक लक्ष्मण राव और पटकथा लेखक तथा फिल्म समीक्षक गणेश मटकरी के साथ जो विमर्श किया, उसमें वास्तविक घटनाओं और कपोल कल्पना के सहारे से रचे गए मराठी साहित्य के लंबे इतिहास पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने बताया कि कैसे मराठी लेखक अपनी कहानियों में काल्पनिक और गैर-काल्पनिक तथ्यों का चतुराई से उपयोग करते हैं। राव और मटकरी ने बहुत अच्छे से स्पष्ट किया कि कैसे ये शैलियां अलग-अलग नहीं, अपितु मराठी साहित्य को समृद्ध करने के लिए सह-अस्तित्व में हैं।

> **फिक्शन और नॉन-फिक्शन दोनों ही शक्तिशाली माध्यम हैं, जिससे लेखक कहानियां सुनाते हैं, चाहे वे वास्तविकता में घटित हुई हों या काल्पनिक हों।**

मराठी साहित्य में कहानी कहने की शैली चर्चा का एक प्रमुख बिंदु थी। वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि फिक्शन और नॉन-फिक्शन दोनों ही शक्तिशाली माध्यम हैं, जिससे लेखक कहानियां सुनाते हैं, चाहे वे वास्तविकता में घटित हुई हों या काल्पनिक हों। उन्होंने तर्क दिया कि ये कहानियां दुनिया और हमारे अस्तित्त्व के बारे में, हमारी समझ को आकार देने में सहायक हैं। सभी ने यह स्वीकार किया कि वास्तविकता को कल्पना का मुलम्मा चढ़ाने में बहुत बारीक संतुलन बनाये रखने की चुनौती लेखक के सामने रहती है।

राव और मटकरी ने इस बात पर भी चर्चा की कि कैसे रचनात्मक प्रक्रिया कभी-कभी तथ्य और कल्पना के बीच की रेखाओं को धुंधला कर सकती है, जिससे वास्तविकता की अधूरी व्याख्या या गलत बयानी हो सकती है। उन्होंने स्वीकार किया कि रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए लेखक को कुछ कल्पना की जरूरत होती है परन्तु इसकी आड़ में तथ्यों से छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा, "मराठी लेखकों की अपने पाठकों के प्रति जिम्मेदारी है कि वे तथ्य और कल्पना के बीच अंतर करें। हालांकि रचनात्मक स्वतंत्रता कहानी के कथन को बढ़ा सकती है लेकिन कथा के भरोसे को बनाए रखने के लिए वास्तविकता पर टिके रहना महत्त्वपूर्ण है।"

Ganesh Matkari

Laxman Rao

Deepa Mishra felicitates Sheetal Dhage

A question from an attendee

The audience

मराठी कविता: सामाजिक परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक

Ashutosh Javadekar, Dnyanesh Wakudkar, Sheetal Dhage and Kirti Kirdatt

मराठी कवि पुराने समय से ही अपनी कविताओं में महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने और उनकी गहरी पड़ताल करने में आगे रहे हैं। **आखर महाराष्ट्र महोत्सव** के तीसरे सत्र में समाज पर मराठी कविता का प्रभाव, सामाजिक मूल्यों और दृष्टिकोण को आकार देने पर मराठी कविता के गहरे प्रभाव का विवेचन हुआ। रायपुर की **अहसास** वूमेन कीर्ति किरदत्त ने संगीतकार और लेखक आशुतोष जावड़ेकर, शीतल ढगे और ज्ञानेश वाकुडकर के साथ इस वैचारिक सत्र में संवाद किया और निष्कर्ष निकला कि कविता की प्रभावी अभिव्यक्ति सामाजिक बदलाव का सामर्थ्य रखती है। वक्ताओं ने बताया कि कैसे मराठी कविता ने जाति–आधारित भेदभाव, लैंगिक असमानता और विषमता के अन्य रूपों को अपना विषय बनाया और मराठी कवि बदलाव की आवाज बन गए हैं।

सामाजिक मूल्यों और दृष्टिकोण को आकार देने के लिए मराठी कविता की क्षमता पर विशेष तौर पर चर्चा की गयी। जावड़ेकर, ढगे और वाकुडकर ने इस बात के ऐसे दृष्टांत दिये, जिससे लगा कि कैसे कवियों ने लोक धारणा को प्रभावित किया है। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि कविता में भावनाओं को जगाने, विचार को प्रोत्साहित करने और अंततः व्यक्तियों और समुदायों को प्रेरित करने की अद्वितीय शक्ति होती है। सहभागियों ने कहा, "मराठी कवियों ने न केवल अपने समय के मुद्दों का दस्तावेजीकरण किया है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के आंदोलनों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया हैउनके शब्द पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहे हैं, जो उन्हें अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज की वकालत करने के लिए प्रेरित करते हैं।"

> **मराठी कवियों ने न केवल अपने समय के मुद्दों का दस्तावेजीकरण किया है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के आंदोलनों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया है**

इस सत्र में शामिल कवियों ने अपनी रचनाएं भी सुनायीं। इस चर्चा में पूरे भारत से आयी हुईं **अहसास** वूमेन के साथ–साथ विद्यार्थी व अन्य विशिष्ट जन उपस्थित थें।

Shonali Nakshine

Smita Jaykar and Jyoti Kapoor in the audience

मराठी सिनेमा: क्षेत्रीय अस्मिता का पोषण

Shreyas Bhave, Ashutosh Javadekar, Smita Jaykar and Ganesh Matkari

आखर महाराष्ट्र महोत्सव के चौथे सत्र में **'मराठी सिनेमा: क्षेत्रीय अस्मिता का पोषण'** शीर्षक के अंतर्गत मराठा पहचान और संस्कृति को बढ़ावा देने और संरक्षित करने में मराठी सिनेमा की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर गंभीर चर्चा की गयी। फिल्म समीक्षक और पटकथा लेखक गणेश मटकरी, संगीतकार और लेखक आशुतोष जावड़ेकर और अभिनेत्री स्मिता जयकर ने श्रेयस भावे के साथ बातचीत में महाराष्ट्र के सांस्कृतिक ताने–बाने में मराठी फिल्मों के बहुमूल्य योगदान को रेखांकित किया।

वक्ताओं का मत था कि मराठी फिल्में क्षेत्र की अनूठी भावना, परंपराओं और मूल्यों को समाहित करते हुए सांस्कृतिक राजदूत के रूप में काम करती हैं। उन्होंने कहा, "मराठी सिनेमा के कहानी कहने के तरीके ने संगीत और दृश्यों के माध्यम से महाराष्ट्र की सांस्कृतिक समृद्धि को दुनिया भर के दर्शकों तक सफलतापूर्वक पहुंचाया है।"

इस सत्र में वैश्विक स्तर पर मराठी भाषियों के बीच साझा पहचान को बढ़ावा देने में मराठी सिनेमा की भूमिका पर भी विमर्श हुआ। वक्ताओं का मत था कि इन फिल्मों ने न केवल मनोरंजन किया है, बल्कि महाराष्ट्र की भाषा और संस्कृति से जुड़े हुए समुदायों को एकजुट भी किया है, जिससे उन लोगों में अपनेपन और गर्व की भावना पैदा हुई है। वक्ताओं ने स्वीकार किया, "मराठी सिनेमा ने भौगोलिक सीमा को पार कर लिया है और मराठी भाषियों को उनके स्थान की परवाह किए बिना जोड़ा है।"

सत्र में मराठी सिनेमा की उपलब्धियों पर ख़ुशी व्यक्त की गयी, पर साथ ही भविष्य की चुनौतियों पर भी चर्चा की गई। वक्ताओं ने माना कि किसी भी अन्य क्षेत्रीय सिनेमा की तरह, मराठी सिनेमा को सीमित बजट, अधिक सिनेमा घरों तक पहुंच और मुख्यधारा के हिंदी सिनेमा से प्रतिस्पर्धा जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने मराठी सिनेमा की जीवंतता सुनिश्चित करने के लिए इसके विकास और प्रचार को समर्थन देने के महत्व पर जोर दिया।

मराठी फिल्म *'बाईपंण भारो देवा'* का उल्लेख भी हुआ, जिसकी कहानी सिर्फ समस्याओं के बारे में नहीं अपितु वास्तविक संघर्षों से जूझ रही महिलाओं के जीवन की झलक है। यह मराठी फिल्म उद्योग में सर्वाधिक कमाई करने वाली महिला केंद्रित फिल्म है, जिसे बेहतरीन प्रचार रणनीति के साथ बाजार में उतारा गया था।

> मराठी सिनेमा ने भौगोलिक सीमा को पार कर लिया है और मराठी भाषियों को उनके स्थान की परवाह किए बिना जोड़ा है।

सत्र में जावड़ेकर ने मराठी सांस्कृतिक समृद्धि का एक और पहलू दिखाते हुए अपनी संगीत रचना की प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह सत्र इस गहन संवाद का साक्षी रहा कि कैसे मराठी सिनेमा दुनिया भर के मराठी भाषियों के लिए गौरव, एकता और कलात्मक अभिव्यक्ति का स्रोत बना हुआ है। सत्र में उपस्थित लोगों ने महाराष्ट्र के सांस्कृतिक परिदृश्य में मराठी सिनेमा के अनूठे योगदान की गहरी सराहना की।

The audience listens

मराठी साहित्य: सामाजिक परिवर्तन का प्रेरक

Deepa Mishra, Dnyanesh Wakudkar, Laxman Rao, Mangala Godbole and Priyanka Kothari

मराठी साहित्य और सामाजिक परिवर्तन विषय पर **आखर महाराष्ट्र महोत्सव** के पांचवें सम्मोहक सत्र का निष्कर्ष था कि मराठी साहित्य, महाराष्ट्र के पूरे इतिहास में सामाजिक परिवर्तन को प्रतिबिंबित और प्रेरित करने की एक प्रेरक शक्ति रहा है। इस सत्र में अनुभवी लेखिका मंगला गोडबोले और लक्ष्मण राव ने ज्ञानेश वाकुडकर के साथ विचारोत्तेजक बातचीत में समाज पर साहित्यिक रचनाओं के प्रभाव की चर्चा की।

मराठी साहित्य की दोहरी भूमिका — सामाजिक स्थितियों का दर्पण और उनमें परिवर्तन के लिए उत्प्रेरणा — इन दोनों रूप में विद्यमान रही है। वक्ताओं ने इस बात पर प्रकाश डाला कि मराठी लेखकों ने अपने समय की सामाजिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए साहित्यिक क्षमता का उपयोग किया है। उन्होंने कहा, "मराठी लेखकों ने मर्मस्पर्शी आख्यानों के माध्यम से जाति-आधारित भेदभाव, लैंगिक असमानता और अन्याय के अन्य रूपों जैसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को विमर्श के केंद्र में रखा है।"

सत्र में सहभागियों ने सामाजिक कार्यों के लिए व्यक्तियों और समुदायों को संगठित करने की मराठी साहित्य की क्षमता पर भी जोर दिया। वक्ताओं ने इस बात के उदाहरण दिए कि कैसे साहित्यिक कृतियों ने पाठकों को अपने समाज के महत्त्वपूर्ण मुद्दों से जुड़ने और उनका समाधान करने के लिए प्रेरित किया है। मराठी लेखक केवल मूक दर्शक नहीं अपितु बदलाव के माध्यम बने हैं।

> "साहित्यिक कृतियों ने पाठकों को अपने समाज के महत्त्वपूर्ण मुद्दों से जुड़ने और उनका समाधान करने के लिए प्रेरित किया है। मराठी लेखक केवल मूक दर्शक नहीं अपितु बदलाव के माध्यम बने हैं।"

सत्र में साहित्य की उस विशेष भूमिका पर जोर दिया गया जो एक न्यायसंगत और समतामूलक समाज को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित रहती है। गोडबोले, राव और वाकुडकर ने मराठी साहित्य के अपने गहन ज्ञान से इस बात पर प्रकाश डाला कि लेखकों ने यथास्थिति को चुनौती दी, मानवाधिकारों की वकालत की और अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक मानदंडों की सीमाओं को विस्तारित किया है।

सत्र के अंत में उपस्थित लोगों ने महाराष्ट्र के सामाजिक ताने-बाने पर मराठी साहित्य के गहरे प्रभाव की, गहरी सराहना की और दर्शकों को भी अपने सवाल रखने का अवसर मिला।

The audience

मराठी साहित्य और सामाजिक परिवर्तन: सांस्कृतिक परिदृश्य की खोज

Sachin Jahagirdar and Kedarnath Phalke

आखर महाराष्ट्र महोत्सव ने अपने छठे सत्र में उपस्थित श्रोताओं के लिए **'मराठी साहित्य और सामाजिक परिवर्तन'** विषय पर चर्चा का उपहार बचा कर रखा हुआ था। इस सत्र में *विदर्भ लिटरेचर फेस्ट* के संस्थापक सचिव सचिन जहागीरदार और इतिहासकार केदार फाल्के की उपस्थिति में मराठी साहित्य की परिवर्तनकारी शक्ति और वर्षों से राज्य के सांस्कृतिक ताने बाने पर इसके गहरे प्रभाव पर चर्चा की गयी।

सत्र की मुख्य बात महाराष्ट्र के समृद्ध इतिहास में विशेष रूप से शिवाजी महाराज की विरासत की खोज थी। जहागीरदार और फाल्के ने इस बात पर वैचारिक दृष्टि प्रस्तुत की कि कैसे मराठी साहित्य ने इस विख्यात ऐतिहासिक नायक की वीर गाथाओं को संरक्षित रखा और समय-समय पर उसे प्रस्तुत किया। वक्ताओं ने श्रोताओं को कहानी के माध्यम से यह समझाने की कोशिश की कि ऐतिहासिक गाथाओं को जिन्दा रखने में साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

इसी विषय पर चर्चा के दौरान प्रसिद्ध कवि भूषण के महत्त्व को रेखांकित किया गया। एक तरह से इस संवाद का मुख्य बिंदु मराठी साहित्य में कवि भूषण का महत्त्वपूर्ण योगदान और उनकी ऐतिहासिक प्रासंगिकता के रूप में उभरा। फाल्के ने जब भूषण की कविताओं का पाठ किया, तो प्रतीत हुआ कि किस तरह कविता के छंद इतिहास के सार रूप को अभिव्यक्त करने में सक्षम हो जाते हैं और पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में सहायक होते हैं।

> "किस तरह कविता के छंद इतिहास के सार रूप को अभिव्यक्त करने में सक्षम हो जाते हैं और पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में सहायक होते हैं।"

ऐतिहासिक घटनाओं पर कहानी कहने में तथ्यों की पवित्रता पर जोर देते हुए फाल्के ने कहा, "ऐतिहासिक घटनाओं की किसी भी गलत प्रस्तुति या विरूपण को बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए।" दर्शकों ने साहित्य के माध्यम से इतिहास को चित्रित करने में किए गए गहन शोध और समर्पण की मुक्त कंठ से सराहना की।

> "कवियों की रचनाओं से मराठी साहित्य सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम बना हुआ है, जो हमें आश्वस्त करता है कि महाराष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत युगों-युगों तक कायम रहेगी।"

यह सत्र समाज और संस्कृति पर मराठी साहित्य के गहरे प्रभाव के प्रति एक विनम्र कृतज्ञता थी। गहन चर्चा से सामने आया कि कैसे साहित्य ने न केवल ऐतिहासिक विरासतों को संरक्षित किया है बल्कि सामाजिक परिवर्तन को भी प्रेरित किया है। सभी वक्ता इस बात पर सहमत थे, "भूषण और अन्य कवियों की रचनाओं से मराठी साहित्य सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम बना हुआ है, जो हमें आश्वस्त करता है कि महाराष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत युगों-युगों तक कायम रहेगी।"

Nidhi Garg

Kirti Kirdatt

मनमोहक प्रदर्शन: संस्कृति की धड़कन

Bharud performance by Chandatai Tiwadi and her troupe

आखर महाराष्ट्र महोत्सव न केवल बौद्धिक चर्चाओं का एक मंच, बल्कि ऐसी प्रस्तुतियों का एक जीवंत प्रदर्शन भी था जिसने महाराष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में जीवनी शक्ति डाल दी। ये प्रस्तुतियां स्थानीय लोगों के जीवन का सार, उनकी कला और संस्कृति के संरक्षण और प्रचार में उनकी अमूल्य भूमिका से गुंजायमान रहीं। इसमें शामिल उल्लेखनीय कलाकारों में एक प्रसिद्ध भरुड़ कलाकार और सामाजिक कार्यकर्ता, भारुड़ रत्न चन्दाताई तिवाड़ी ने अपनी प्रतिभा से दर्शकों पर एक अमिट छाप छोड़ी और **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की इस पहल के लिए हार्दिक सराहना की।

> "आखर महाराष्ट्र महोत्सव में केवल कलात्मक प्रदर्शन नहीं था बल्कि महाराष्ट्र की सांस्कृतिक ताने-बाने का भी उत्सव था। यह हमें स्मरण दिलाता है कि कला की ताकत से ही विभिन्न समुदाय एकत्र हो सकते हैं और सांस्कृतिक विरासत को बचा सकेंगे।"

पारंपरिक लोक नृत्यों से लेकर दिल को छू लेने वाले संगीत प्रदर्शन महाराष्ट्र की लोक संस्कृति का जीवंत प्रतीक थे। प्रसिद्ध नृत्यांगना शिल्पा शाहिर ने पारंपरिक मराठी लोक नृत्य लावणी का मनमोहक प्रदर्शन किया । उनके द्वारा प्रस्तुत नृत्य ने यह दिखाया कि संस्कृति को बचाकर कितने सुन्दर तरीके से उसको अभिव्यक्त भी किया जा सकता है। उनके नृत्य ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। आलोक राजवाड़े द्वारा निर्देशित एक प्रयोगात्मक नाटक *'प्रस्थान उर्फ़ एग्ज़िट'* का मंचन भी किया गया। इसने महाराष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की एक ज्वलंत झलक प्रदान की। इस नाटक में विख्यात कलाकार सुनीता थट्टे और गजानन परांजपे ने अभिनय किया।

इस सत्र का सबसे लुभावना कार्यक्रम चन्दा ताई का भारुड़ गायन था। ताई को सब लोग प्यार से भारुड़ का रत्न कहते हैं। उनका गायन पारंपरिक मराठी लोक कला भारुड़ की एक मनोरम प्रस्तुति थी, जिसमें संगीत और नृत्य के साथ कहानी कहने का अलग अंदाज़ है। चन्दा ताई की प्रतिभा और कहने की अनूठी शैली ने दर्शकों को महाराष्ट्र की लोक परंपराओं के दिल तक पहुंचा दिया। सामूहिकता और सांस्कृतिक उत्सव के दिल को छूने वाले प्रदर्शन में **प्रभा खेतान फाउंडेशन**

The Ehsaas Women join the performers on stage

A scene from the play

Apra Kucchal felicitates the performers

Audience members captivated by the stage performances

की राजस्थान और मध्य भारत की मानद संयोजक अपरा कुच्छल एवं अन्य अहसास वूमेन भी भारुड़ रत्न के साथ मंच पर उपस्थित थीं।

चन्दा ताई तिवाड़ी, जो एक सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षिका भी हैं, ने **आखर महाराष्ट्र महोत्सव** के आयोजन हेतु फाउंडेशन के प्रयासों के लिए भूरी–भूरी प्रशंसा की और 'क्षेत्रीय भाषाओं, संस्कृति और परंपराओं को मनाने और संरक्षित करने के लिए फाउंडेशन की प्रतिबद्धता' के लिए साधुवाद दिया।

आखर महाराष्ट्र महोत्सव में केवल कलात्मक प्रदर्शन नहीं था बल्कि महाराष्ट्र की सांस्कृतिक ताने–बाने का भी उत्सव था। यह हमें स्मरण दिलाता है कि कला की ताकत से ही विभिन्न समुदाय एकत्र हो सकते हैं और सांस्कृतिक विरासत को बचा सकेंगे।

The audience claps along with the Bharud performers

Lavni performance by Shilpa Shahir

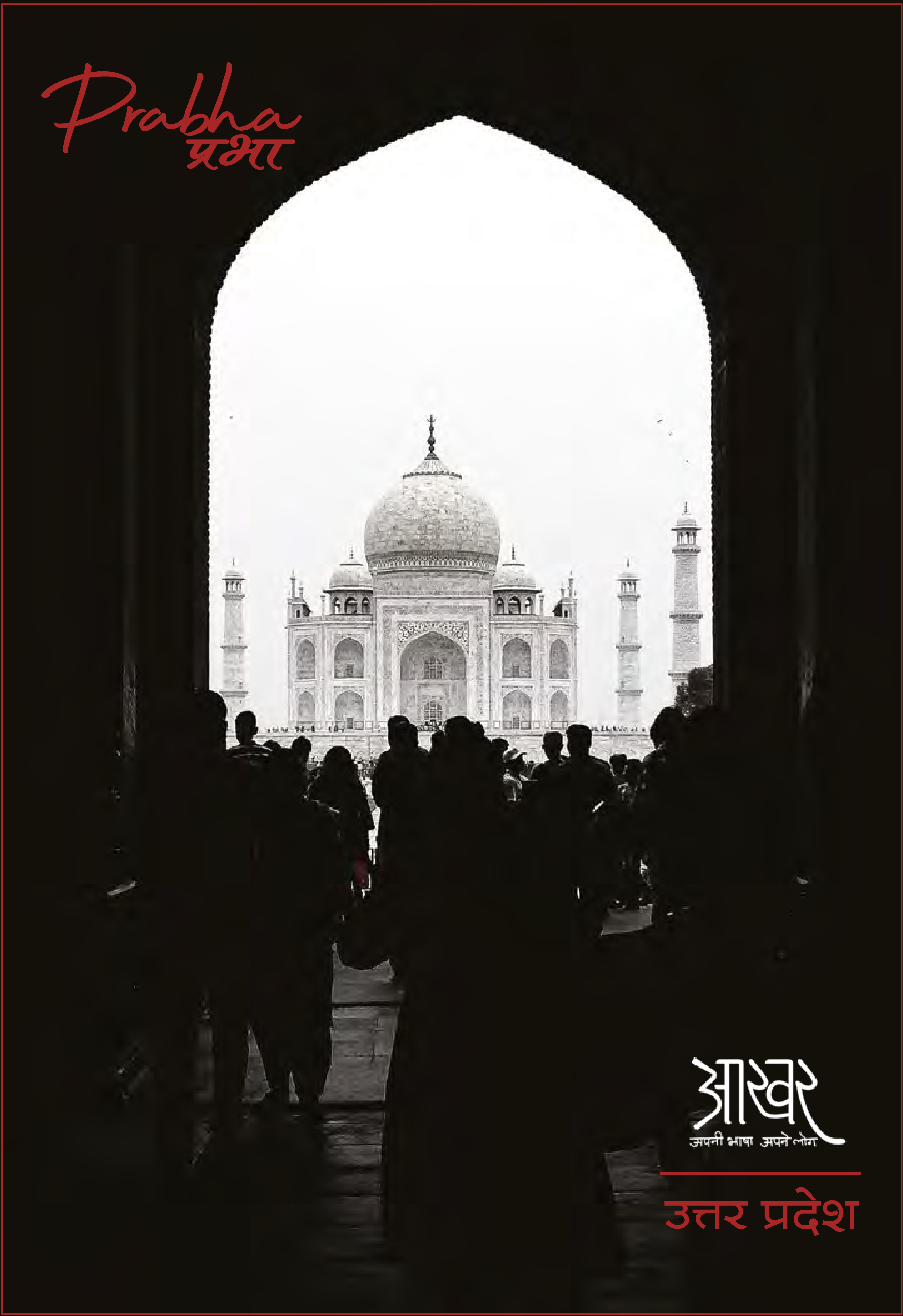

Prabha
प्रभा

आखर
अपनी भाषा अपने लोग

उत्तर प्रदेश

भाषा के रंग, साहित्य के संग: जीवंत हो उठी लोक कलाएं और बोलियां

Vidya Vindu Singh and Brajesh Pathak inaugurate the festival with Anindita Chatterjee, Madhuri Halwasiya, Kanak Rekha Chauhan and Deepa Mishra

अवध की माटी, संस्कृति और बोली की खूशबू को समेटने वाले ये दो दिन राज्य की स्मृतियों में लंबे समय तक बने रहने वाले थे। वजह बना **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा **'आखर उत्तर प्रदेश — भाषा के रंग, साहित्य के संग'** का दो दिवसीय आयोजन। इस आयोजन में कला, साहित्य, संस्कृति, संगीत की बहुरंगी छवियां उभरीं। उद्घाटन समारोह में राज्य के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि मातृभाषा में ही हम स्वयं को सही रूप में अभिव्यक्त कर पाते हैं। क्षेत्रीय भाषाओं के उल्लेख के बिना हिंदी की कल्पना नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि हमारी अवधी, भोजपुरी, बुंदेलखंडी और बृज भाषा के योगदान से ही हिंदी समृद्ध होती है। हिंदी नए शब्द भी आत्मसात करती है। उन्होंने फाउंडेशन की गतिविधियों की सराहना की और हर सहयोग का भरोसा दिलाया।

आखर की शुरुआत **अहसास** वूमेन लखनऊ कनक रेखा चौहान द्वारा उपस्थित लोगों की गर्मजोशी भरे स्वागत से हुई। उन्होंने **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह आयोजन उत्तर प्रदेश की भाषाई विविधता का जश्न मनाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण मंच प्रदान करता है, जो राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक आकृति को दर्शाता है। **आखर उत्सव** न केवल बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं को प्रदर्शित करता है, बल्कि भाषा, साहित्य और लोगों की सांस्कृतिक विरासत के बीच गहरे संबंध पर भी जोर देता है। फाउंडेशन का उद्देश्य **'अपनी भाषा, अपने लोग'** की सोच को बढ़ावा देना है, ताकि लोग पहचान के अभिन्न अंग के रूप में अपनी भाषा को अपनाएं और मनाएं। यह समुदायों के बीच एकता और समझ को बढ़ावा देने में भाषाई विविधता के महत्त्व को रेखांकित करता है।

> लोक भाषाएं हिंदी की ताकत हैं। हर भाषा को विकास का अधिकार है परन्तु हिंदी से कट कर नहीं। इससे हिंदी कमजोर होगी।

चौहान ने उपमुख्यमंत्री की उपस्थिति को भाषाई विविधता को संरक्षित करने, बढ़ावा देने के साथ ही भाषाओं को संस्कृति, इतिहास और सामूहिक स्मृति के भंडार के रूप में मान्यता देने की सरकार की प्रतिबद्धता से जोड़कर देखा। उन्होंने कहा कि **आखर उत्सव** अपने प्रतिभागियों को उत्तर प्रदेश की भाषाई और साहित्यिक समृद्धि से जुड़ने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। यह सांस्कृतिक सेतु के रूप भाषा और साहित्य के एक साझा माध्यम से लोगों को जोड़ता है, और राज्य के निवासियों के बीच गर्व और संबंध की भावना को बढ़ावा देता है।

लखनऊ शहर में दो दिवसीय इस सांस्कृतिक उत्सव का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। तत्पश्चात डॉ विद्या विन्दु सिंह ने कहा कि लोक भाषाएं हिंदी की ताकत हैं। हर भाषा को विकास का अधिकार है परन्तु हिंदी से कट कर नहीं। इससे हिंदी कमजोर होगी। तुलसी और जायसी को हिंदी से अलग नहीं कर सकते। लोक भाषाओं की शक्ति हिंदी के साथ जुड़ी रहनी चाहिए। युवा पीढ़ी में विरासत के प्रति ललक बढ़ी है। मूर्त और अमूर्त यानी स्थापत्य, मूर्ति कला, चित्र साथ ही साहित्य ज्ञान, संस्कार और संस्कृति। हम अपनी विरासत को आगे की पीढ़ी को सौंप कर जायें।

प्रभा खेतान फाउंडेशन की कार्यकारी न्यासी अनिंदिता चटर्जी ने मुख्य अतिथि ब्रजेश पाठक और डॉ विद्या बिन्दु सिंह का अभिनंदन मधुबनी दुपट्टा भेंट कर किया। अंत में माधुरी हलवासिया ने मुख्य अतिथि ब्रजेश पाठक और डॉ विद्या विन्दु सिंह सहित सभी प्रतिभागियों, गणमान्य व्यक्तियों और उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया।

लोक कलाकारों और गीतों ने बिखेरा रंग

Munna Anvar, Chandresh and Ranjana Agrahari

अमिताभ श्रीवास्तव, रंजना अग्रहरी, मुन्ना अनवर, दीपेंद्र कुमार और चंद्रेश सहित प्रसिद्ध लोक गीतकारों ने लोक गीतों पर केंद्रित एक शानदार कार्यक्रम से **'आखर उत्तर प्रदेश — भाषा के रंग, साहित्य के संग'** को सीधे लोक से जोड़ दिया। इन लोक कलाकारों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों ने जनजीवन में लोक गीतों के महत्त्व को तो उजागर किया ही, राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में भी बताया। इन लोक गायकों ने अपनी गायिकी में निहित समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को अभिव्यक्त किया। लोक गीतों का आकर्षण न केवल उनकी संगीत लय में है, बल्कि उनकी गहरी भावनाओं और कहानियों में भी दिखायी देती है।

अनामिका श्रीवास्तव का कहना था कि इन लोक धुनों के माध्यम से व्यक्त स्वर और भावनाएं वास्तव में अद्वितीय हैं।

उन्होंने अपनी टिप्पणी में इन लोक रचनाओं के माध्यम से व्यक्त की गई भावनाओं की गहराई पर प्रकाश डाला। उन्होंने उन अनूठे गुणों पर जोर दिया जो लोक गीतों को विशेष बनाते हैं, और जिनकी सांस्कृतिक कथाओं और अभिव्यक्तियों पर कलाकार पात्र के रूप में कार्य करते हैं। लोक रचनाओं की शक्ति से प्रेरित यह कार्यक्रम न केवल भाषाई विविधता का जश्न मनाता है बल्कि साझा सांस्कृतिक अनुभवों के माध्यम से भी लोगों को जोड़ता है।

> "लोक रचनाओं की शक्ति से प्रेरित यह कार्यक्रम न केवल भाषाई विविधता का जश्न मनाता है बल्कि साझा सांस्कृतिक अनुभवों के माध्यम से भी लोगों को जोड़ता है।"

इन गीतकारों के नेतृत्व में उद्घाटन समारोह ने लोक गीतों की आत्मा को उद्वेलित करने वाली दुनिया की एक झलक प्रदान की। उनकी धुनें और छंद क्षेत्रीय अभिव्यक्तियों में निहित सांस्कृतिक समृद्धि और विविधता के प्रमाण के रूप में सामने आए। जैसे-जैसे कार्यक्रम परवान चढ़ा, लोक परंपराओं के ताने-बाने में बुनी गई कहानी कहने की परतें भी उजागर होने लगी। जाहिर है संगीत और साहित्य के इस अनूठे सामंजस्य ने दर्शकों को न केवल अपने साथ झूमने पर मजबूर कर दिया, बल्कि उनकी स्मृतियों में भी लंबे समय तक बना रहेगा।

Deependra

Audience members dance to the Awadhi music

Anamika Srivastava

अवधी का लोक संसार और साहित्यिकी

प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा आयोजित **'आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव'** में डॉ विद्या विन्दु सिंह, अमरेंद्र नाथ त्रिपाठी और सूर्यप्रसाद दीक्षित ने **'लोक जगत और अवधी का साहित्य'** विषय पर अपनी बात रखी। सत्र का संचालन डॉ. शोभा बाजपेयी ने किया।

प्रोफेसर दीक्षित ने अवधी के प्राचीन और आधुनिक साहित्यिक पहलुओं पर प्रकाश डाला, जबकि सिंह ने अवधी लोक गीतों में परिलक्षित समावेशी सामाजिक परिवेश की चर्चा की। डॉ. त्रिपाठी ने युवा पीढ़ी को अवधी साहित्य से जोड़ने के प्रयासों पर जोर दिया, साथ ही फाउंडेशन की टैगलाइन *'भाषा के रंग साहित्य के संग'* की भी सराहना की।

अवधी संस्कृति और साहित्य पर चर्चा से जुड़े इस सत्र में विद्वान वक्ताओं ने अवधी की समृद्ध विरासत को तो उजागर किया ही, इसकी ऐतिहासिक गहराई और समकालीन प्रासंगिकता दोनों का परिदृश्य सामने रखा। विद्वानों की गहन अंतर्दृष्टि से सामने आए वक्तव्य ने अवधी साहित्य और लोक परंपराओं के माध्यम से बुने गए सांस्कृतिक पटल का विहंगम और व्यापक फलक दर्शकों, श्रोताओं के समक्ष रखा।

Kanak Rekha Chauhan

'आखर महोत्सव' जैसे कार्यक्रम न केवल भाषाई समृद्धि का जश्न मनाते हैं, बल्कि परंपरा और आधुनिकता के बीच की खाई को पाटने वाली सार्थक चर्चाओं को भी बढ़ावा देते हैं। विद्वानों और बुद्धिजीवियों को एक साथ लाकर, फाउंडेशन उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिसका उदाहरण इस ज्ञानवर्धक सत्र के दौरान अवधी के लोक जीवन और साहित्य के वैचारिक संवाद के बीच भी देखने को मिला।

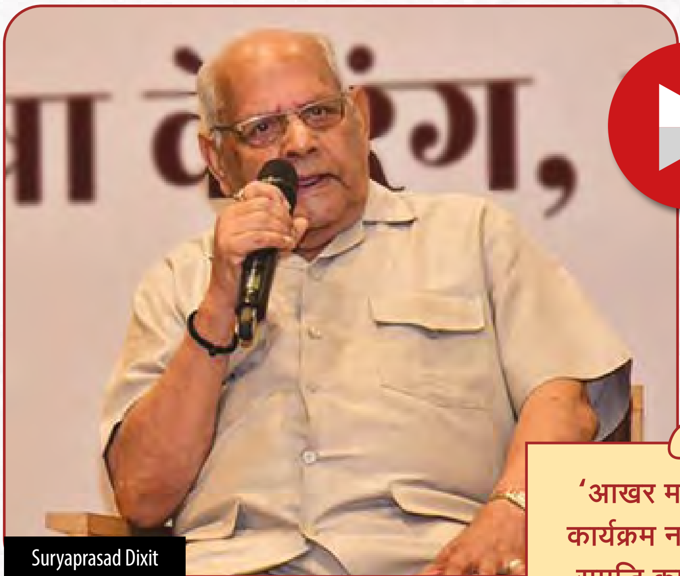

Suryaprasad Dixit

Vidya Vindu Singh

"'आखर महोत्सव' जैसे कार्यक्रम न केवल भाषाई समृद्धि का जश्न मनाते हैं, बल्कि परंपरा और आधुनिकता के बीच की खाई को पाटने वाली सार्थक चर्चाओं को भी बढ़ावा देते हैं"

Shobha Bajpayi

Amrendra Nath Tripathi

अनुवाद साहित्य को विस्तार देता है, साथ ही कई आयाम भी खोल देता है

प्रभा खेतान फाउंडेशन के **आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव** में **'अनुवाद से खुलते भाषा के द्वार'** सत्र में युवा टेक्नोक्रेट अदिति यादव, सेवानिवृत्त वरिष्ठ आईएएस अनीता भटनागर जैन और जर्मन भाषा की शिक्षिका डॉ शिप्रा चतुर्वेदी ने गम्भीर चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रोफेसर रानू उनियाल ने किया।

इस सत्र में भाषा और साहित्य में अनुवाद के महत्त्व पर बातें हुई। अनुवाद से अनुवाद की यात्रा कैसी रहती है इस पर सत्र केन्द्रित रहा। इस मंच पर अनुवाद के महत्त्व को उजागर किया। साथ ही भाषा के मिठास पर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

अनुवाद साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है, उसकी आवश्यकता और महत्त्व पर मौजूद अतिथियों ने अपने सारगर्भित वक्तव्य से सत्र को सार्थकता प्रदान की।

डॉ. शिप्रा ने विदेशी साहित्य को जानने की उत्सुकता और उसे भारतीय पाठकों को तक सहजता से पहुंचाने के लिए अनुवाद को एक सशक्त माध्यम माना है। जर्मन साहित्य को हिन्दी में लाने की कोशिश उन्होंने की। वहीं अनीता ने अपने कर्म क्षेत्र के अनुभव साझा किए। अदिति ने जापानी भाषा के बारे में बताया कि उसकी तीन लिपियां हैं। ऐसे में उसके साहित्य का अनुवाद कितना कठिन होगा। साथ ही कई महत्त्वपूर्ण उपन्यास व साहित्य जिसे जानना भी जरूरी है। ऐसे में सेतु की तरह अनुवाद ही अहम भूमिका निभा सकता है और उसने निभाया भी। अनुवाद एक सशक्त भाषाई हथियार है। इसका होना ही सभी साहित्य को विस्तार देता है साथ ही साहित्य के लिए भी कई आयाम खोल देता है।

> "अनुवाद एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा के पाठकों तक संचारित करता है और उस भाषा को विस्तार प्रदान करता है..."

अनुवाद जो एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा के पाठकों तक संचारित करता है और उस भाषा को विस्तार प्रदान करता है, इसीलिए साहित्य के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी साहित्य की। यह सत्र **'अनुवाद से खुलते भाषा के द्वार'** ट्रांसलेशन लिटरेचर की पृष्ठभूमि पर आधारित था। इसमें उपस्थित दर्शकों ने ज्ञान से भरी चर्चा का लुत्फ उठाया। कार्यक्रम में **अहसास** वूमेन दीपा मिश्रा ने सभी अतिथियों को उत्तरीय से सम्मानित किया।

Aditi Yadav, Anita Bhatnagar Jain, Shipra Chaturvedi and Ranu Uniyal

उल्लास — ग्रामीण अंचल के गीत

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के **'उल्लास– ग्रामीण अंचल के गीत'** सत्र में, अयोध्यावासी राम जी और उनकी संगीत मंडली ने अद्भुत प्रस्तुति दी। उन्होंने *'लकड़ी साथी'*, *'रहना कबीर दास'* और *'जागो बहुरिया हो गई भोर'* जैसे गीतों के माध्यम से उस कालखंड की आत्मा को सांगीतिक रूप में प्रस्तुत किया। इन गीतों ने सुनने वालों के दिलों को छू लिया।

इस शानदार प्रदर्शन के माध्यम से **अहसास** वूमेन कनक रेखा चौहान ने इस कला के प्रति उत्कृष्टता की एक मिसाल प्रस्तुत की और समृद्ध ग्रामीण संस्कृति के साथ उल्लास सत्र को नवीनता और ऊर्जा से भर दिया। इस सांगीतिक प्रस्तुति के माध्यम से महोत्सव ने प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर को महत्त्वपूर्ण रूप से अभिव्यक्त और ग्रामीण क्षेत्रों के सौन्दर्य को सकारात्मक रूप से उजागर किया है। यह आयोजन न केवल सांस्कृतिक धरोहर के प्रति सम्मान का भाव रखता है, बल्कि स्थानीय कला और साहित्य के प्रति अपने समर्पण से सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने का एक अद्वितीय उदाहरण पेश करता है।

> महोत्सव ने प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर को महत्त्वपूर्ण रूप से अभिव्यक्त और ग्रामीण क्षेत्रों के सौन्दर्य को सकारात्मक रूप से उजागर किया है।

Ramji performs

The accompanying musicians

Kanak Rekha Chauhan felicitates the group

साहित्यिक धारा की समृद्धि से भरा रहा 'अवधी कविता के रंग' सत्र

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के 'अवधी कविता के रंग' सत्र में रश्मि शुक्ल, प्रदीप महाजन, राधा पांडेय और विनीता मिश्रा ने अपनी प्रेम से भरी कविताओं, गीतों, और छंदों के माध्यम से दर्शकों का मन मोह लिया। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अवधी भाषा की साहित्यिक धारा को समृद्धि से भरा। इनकी कविताओं, प्रेम गीत और छंदों में समाहित भावनाओं ने सुनने वालों को साहित्यिक रस में भिगो दिया।

इस सत्र की सार्थक चर्चा ने साहित्यिक उत्सव को एक नई ऊंचाई तक पहुंचाया। अभिनंदन **अहसास** वूमेन दीपा मिश्रा ने किया। उन्होंने इस साहित्यिक प्रदर्शन की सुंदरता की सकारात्मकता और इसके माध्यम से समृद्ध ग्रामीण साहित्य के प्रदर्शन की प्रशंसा की। यह सत्र न केवल अवधी साहित्य का समर्थन करता है, बल्कि कलाकारों के माध्यम से इस भाषा की सुंदरता को बढ़ावा देने का एक सुदृढ़ संकेत है। ये साहित्यिक प्रस्तुतियां न केवल स्थानीय साहित्य की महत्ता को बढ़ाती हैं, बल्कि उत्तर प्रदेश की साहित्यिक समृद्धि में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान करती हैं।

> साहित्यिक प्रस्तुतियां न केवल स्थानीय साहित्य की महत्ता को बढ़ाती हैं, बल्कि उत्तर प्रदेश की साहित्यिक समृद्धि में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान करती हैं।

Rashmi Shukla

Radha Pandey

Pradeep Mahajan

Vineeta Mishra

हिंदी सिनेमा में अवधी भाषा की गूंज

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' में **'हिंदी सिनेमा में अवधी भाषा की गूंज'** विषय पर मनोज राजन त्रिपाठी और आत्म प्रकाश मिश्र का प्रभावी संवाद हुआ। इस सत्र में वक्ताओं ने *'गंगा जमुना', 'पीपली लाईव', 'गुलाबो सिताबो'* जैसी हिंदी फिल्मों के माध्यम से अवधी भाषा के सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्त्व को रेखांकित किया।

वक्ताओं ने हिंदी सिनेमा के माध्यम से अवधी भाषा की गूंज को समझाने का प्रयास किया। उन्होंने इस भाषा के सांस्कृतिक संबंध और उसके साहित्यिक पहलुओं को प्रमोट करने में सिनेमा की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। **अहसास** वूमेन कनक रेखा चौहान ने इस सत्र को अपने समृद्धि भरे संवाद से संचालित किया। माधुरी हलवासिया ने वक्ताओं का अभिनंदन किया।

इस सत्र ने न केवल हिंदी सिनेमा में अवधी भाषा के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को उजागर किया, बल्कि यह भी दर्शाया कि सिनेमा कैसे साहित्यिक संदेशों और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है।

> सिनेमा साहित्यिक संदेशों और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है।

Manoj Rajan Tripathi

Atma Prakash Mishra

Kanak Rekha Chauhan and Madhuri Halwasiya with Atma Prakash Mishra and Manoj Rajan Tripathi

बुंदेलखंडी लोक जीवन और साहित्य के सोपान

G.S. Ranjan, Sumit Dubey, Bahadur S. Parmar and Saroj Gupta

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के **'बुंदेलखंडी लोक जीवन और साहित्य के सोपान'** सत्र में बहादुर सिंह परमार, गौरी शंकर रंजन, सरोज गुप्ता और सुमित दुबे ने बुंदेलखंड की लोक संस्कृति और परंपरा पर अपने विचार साझा किये। उन्होंने इस सत्र में बुंदेलखंड के लोक जीवन, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत को समझने की कोशिश की और अपने अनुभवों को साझा किया।

वक्ताओं ने बुंदेलखंड के जनजीवन में व्याप्त उल्लास और संघर्षों से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार किए और उनकी महत्ता को समझाया। उन्होंने यहां के लोक जीवन की भूमिका, लोक साहित्य की विशेषताएं और स्थानीय सांस्कृतिक प्रथाओं पर चर्चा की।

इस सत्र का अभीष्ट यह रहा कि बुंदेलखंड की विशेष सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए लोगों को इसके लोकजीवन और साहित्य के सोपानों में गहराई से जाकर खोजना चाहिए। इसमें सहयोगी कलाकारों ने अपने अद्वितीय दृष्टिकोण और अनुभवों के माध्यम से बुंदेलखंड की विशेषता को साझा किया।

अहसास वूमेन कनक रेखा चौहान ने अपनी गीतात्मक प्रतिभा से सत्र को संचालित किया और सभी कलाकारों को उनके योगदान के लिए हृदय से आभार व्यक्त किया।

"बुंदेलखंड की विशेष सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए लोगों को इसके लोकजीवन और साहित्य के सोपानों में गहराई से जाकर खोजना चाहिए।"

Anindita Chatterjee and Yatindra Mishra

बोली–बानी में अयोध्या का विविध राम साहित्य

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के **'बोली–बानी में अयोध्या का विविध राम साहित्य'** विषय पर यतीन्द्र मिश्र और माधुरी हलवासिया ने संवाद किया। इस संवाद में अयोध्या के साहित्य और संस्कृति में व्याप्त भगवान श्री राम के विविध रूपों को अवधी, उर्दू, बुंदेली भाषा में कैसे व्यक्त किया गया है, इस पर बात हुई।

वक्ताओं ने इस संवाद के माध्यम से अयोध्या की साहित्यिक धारा, कथाकार और भक्ति साहित्य के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस बीच विभिन्न भाषाओं में राम साहित्य की समृद्धि और विकास की चुनौतियों पर भी चर्चा हुई। वक्ताओं ने इसे समझने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक माध्यमों का समर्थन किया।

इस सत्र के माध्यम से श्रोताओं को राम साहित्य के विविध आयामों को समझने का मौका मिला। **अहसास** वूमेन कनक रेखा चौहान ने आभार व्यक्त किया।

> विभिन्न भाषाओं में राम साहित्य की समृद्धि और विकास की चुनौतियों पर भी चर्चा हुई

Madhuri Halwasiya

Yatindra Mishra

Shinjini Kulkarni

Nidhi Garg

Members of the audience listen to the discussion

राम लला को समर्पित अयोध्या शरण मिश्र की सांस्कृतिक प्रस्तुति

'आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' की सांस्कृतिक प्रस्तुति में अयोध्या शरण मिश्र ने अपने पूर्वजों की धरोहर का आदर करते हुए राम लला की जन्मभूमि अयोध्या और ठाकुर जी की सुंदर लीलाओं पर आधारित मनोहारी कथक नृत्य प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने नृत्य के माध्यम से अयोध्या के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक माहौल को बखूबी दर्शाया और सभी उपस्थित व्यक्तियों को एक अनूठे सांस्कृतिक अनुभव यात्रा में ले जाने का प्रयास किया।

मिश्र का अयोध्या की सांस्कृतिक विरासत, उसकी समृद्धि और उसे नई पीढ़ी के साथ साझा करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके नृत्य में राम लला की कथाएं और ठाकुर जी की लीलाएं जीवंत हो उठती हैं। उनका नृत्य न केवल कला का माध्यम है, बल्कि यह आयोध्या के सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

> "पूर्वजों की धरोहर का आदर करते हुए राम लला की जन्मभूमि अयोध्या और ठाकुर जी की सुंदर लीलाओं पर आधारित मनोहारी कथक नृत्य की प्रस्तुति"

Ayodhya Sharan Mishra performs

The accompanying musicians

Ehsaas Women with the performers

भारत की विराटता उसके विविधता की खूबसूरती में है। जैसे सतरंगी इंद्रधनुषी रंग की मोहकता। वैसा ही रंग **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित '**आखर उत्तर प्रदेश** – भाषा के रंग, साहित्य के संग' का मौके पर देखने को मिली।

दो दिवसीय आयोजन में कला, साहित्य, संस्कृति, संगीत की बहुरंगी छटा का आनन्द उठाया, वहीं समापन के बाद के मौजूद अतिथियों ने रात्रि भोजन का लुत्फ उठाया। लजीज व्यंजनों के लुत्फ के साथ ही वहां के स्थानीय स्पर्श की छुअन महसूस हुई। भोजन में उत्तर प्रदेश के स्वाद का आनंद अतिथियों ने उठाया। यह सफर स्वाद का ही नहीं हमारी संस्कृति का भी रहा।

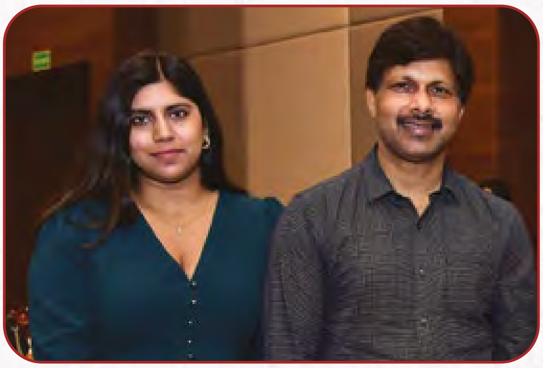

सुमित दुबे की बुंदेली कविताओं ने जीता श्रोताओं का दिल

Sumit Dubey

'आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के दूसरे दिन की शुरुआत सुमित दुबे की बुंदेली कविताओं से हुई, जिसने न केवल श्रोताओं का दिल जीता बल्कि बुंदेली भाषा की गरिमा को बढ़ावा दिया। दुबे की प्रतिभा दर्शकों को अपने साथ बहा ले गयी, जिसमें बुंदेली कविता की मिठास के साथ उसकी माटी की खूशबू भी थी। स्पष्ट था दर्शक, श्रोताओं के मन में बुंदेली संस्कृति की इस प्रस्तुति से और समृद्ध हुई।

दुबे का अभिनंदन **अहसास** वूमेन लखनऊ दीपा मिश्रा ने किया। उन्होंने सुमित दुबे की कला को सराहा और कहा कि आपने बुंदेली साहित्य को गौरवान्वित किया है। दुबे की रचनाएं भाषा, साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत को मजबूती से प्रतिष्ठापित कर रही हैं। इससे बुंदेली भाषा को नया जीवन मिल रहा है और लोग इसे आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

Kumud Singh

> बुंदेली कविता की मिठास के साथ उसकी माटी की खूशबू भी थी।

सुमित दुबे की कविताएं न केवल बुंदेली भाषा की सुंदरता को प्रकट कर रही हैं, बल्कि इसको और समृद्ध करने का शानदार उदाहरण भी प्रस्तुत कर रही हैं। उनका योगदान साहित्यिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में समृद्धि की दिशा में महत्त्वपूर्ण है।

Sumit Dubey performs with Munna Anvar and Chandresh

बुंदेली युवा कवियों और साहित्यकारों का योगदान

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के दूसरे दिन **'बुंदेली युवा कवियों और साहित्यकारों का विवरण'** सत्र में प्रेम प्रकाश चौबे, बलबीर सिंह पाल, और प्रभात कुमार कटारे ने संवाद किया। इन वक्ताओं ने अपनी कविताओं के माध्यम से बुंदेली युवा साहित्यकारों की प्रतिभा और साहित्यिक योगदान को सामने रखा। उन्होंने बताया कि अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने समाज और लोककला की महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कैसे किया है।

इन कवियों ने बुंदेली भाषा और साहित्य के विकास में युवा कवियों का योगदान पर विस्तार से अपना मत रखा और इस क्षेत्र में नयी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए महत्त्वपूर्ण संसाधनों की उपलब्धता पर बल दिया। सत्र के अंत में लखनऊ **अहसास** वूमेन कनक रेखा चौहान स्थानीय कवियों और साहित्यकारों का अभिनंदन किया और उनकी साहित्यिक यात्रा को समर्थन दिया।

> "बुंदेली भाषा और साहित्य के विकास में युवा कवियों का योगदान पर विस्तार से चर्चा और इस क्षेत्र में नयी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए महत्त्वपूर्ण संसाधनों की उपलब्धता पर बल"

Balveer Singh Pal, Kanak Rekha Chauhan, Prem Prakash Choubey and Prabhat Kumar Katare

क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन की चुनौतियां

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के **'क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन की चुनौतियां'** सत्र में मानव प्रकाश, आनंद प्रकाश माहेश्वरी, मिर्ज़ा फुरक़ान बेग और अनामिका श्रीवास्तव ने चर्चा की। इस सत्र में वक्ताओं ने क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन की चुनौतियों पर विस्तार से बातचीत की। मानव प्रकाश ने संस्कृति की संरक्षा के साथ-साथ, भाषा के माध्यम से जनजीवन में उत्थान के साधनों पर ध्यान केंद्रित किया।

> "स्थानीय भाषाओं के प्रति समर्पित प्रकाशन के लिए अधिक समर्थन की जरूरत"

आनंद प्रकाश माहेश्वरी ने स्थानीय भाषाओं के प्रति समर्पित प्रकाशन के लिए अधिक समर्थन की जरूरत बताई और उन्होंने इसे साहित्य और सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा माना। मिर्ज़ा फुरक़ान बेग ने इस चुनौती से निपटने के लिए साहित्यिक समुदाय की एकता को महत्त्वपूर्ण बताया। अनामिका श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए पैनल के उदार दृष्टिकोण की सराहना की। सत्र के समापन पर **अहसास** वूमेन माधुरी हलवासिया ने सभी को धन्यवाद दिया।

Madhuri Halwasiya

Manav Prakash, Mirza Furqan Beg, Anand Prakash Maheshwari and Anamika Srivastava

Ashok Agya

भक्ति साहित्य और ब्रज भाषा

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के दूसरे दिन में 'भक्ति साहित्य और ब्रज भाषा' सत्र में राजकुमार रंजन और रज़िया बेगम ने अपने वक्तव्य औरविचारों से श्रोताओं को आनंद से भरदिया। इस सत्र के वार्ताकार थे अशोक अज्ञ। वक्ताओं ने श्री कृष्ण की लीलाओं पर रचित भक्ति साहित्य की महत्त्वपूर्ण चर्चा की।

वक्ताओं ने सूरदास, कृष्णदास, और महामेरु जैसे प्रमुख भक्ति कवियों का उल्लेख करते हुए कहा कि इनकी रचनाएं भक्ति और साहित्य का अद्वितीय संगम हैं। इनके शब्दों से स्पष्ट होता है कि भारतीय साहित्य की धारा को समृद्ध करने में भक्ति साहित्य और ब्रज भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। **अहसास** वूमेन लखनऊ कनक रेखा चौहान ने सभी वार्ताकारों का आभार व्यक्त किया।

> "भारतीय साहित्य की धारा को समृद्ध करने में भक्ति साहित्य और ब्रज भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान"

Razia Begum

Rajkumar Ranjan

तन की डिबिया में धरो है एक मोती मन को ...

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव लखनऊ में ब्रज भाषा के गीतों की प्रस्तुति ने समां बांध दिया। गायक कलाकार थे श्री राजकुमार रंजन और श्री अशोक अज्ञ। उन्होंने अपने रसमय सुर की धारा में ब्रज के मधुर गीतों और उनके मोहक शब्दों से दर्शक को सराबोर कर दिया।

उनका गायन ब्रज भाषा में था जिसमें तात्कालिक समय के साथ ही भगवानों की अर्चना भी शामिल थीं। गीतों में इतनी गहराई थी कि गायकों ने गायन से दर्शकों को अध्यात्म जगत की ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया। *"तन की डिबिया में धरो है एक मोती मन को..."* जैसे गहरी बात गा कर सुनाई। वही नारी शक्ति के बारे में गीत सुनाया, *"बेटी दुर्गा, बेटी देवी, बेटी ही मात भवानी है और तलवार लिए जब हाथन में, तो झांसी वाली रानी है।"* विविध रंगों व रसों के गीत की मिठास ब्रिज भाषा में गाई जिसका लुत्फ़ दर्शकों ने खूब उठाया।

> समय सुर की धारा में ब्रज के मधुर गीतों और उनके मोहक शब्दों ने दर्शकों को सराबोर कर दिया

Ashok Agya

Rajkumar Ranjan

The rapt audience listens and records the session

हिंदी की धार और आधार बृजभूमि

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के दूसरे दिन **'हिंदी की धार और आधार ब्रजभूमि'** विषय पर हरिसिंह पाल और प्रभात कुमार ने अपने विचार साझा किए। इस सत्र में वक्ताओं ने हिंदी साहित्य की मूल धारा और ब्रजभूमि के सांस्कृतिक आधार के बारे में चर्चा की।

हरिसिंह पाल ने ब्रज–बरसाना संस्कृति की भूमिका पर चर्चा की और बताया कि हिंदी साहित्य के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने इस संस्कृति को हिंदी भाषा की धारा का आधार माना और उसे साहित्यिक दृष्टि से प्रभावशाली बताया।

> श्रीकृष्ण मंदिरों का हिंदी साहित्य पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव है

प्रभात कुमार ने श्रीकृष्ण मंदिरों की भूमिका पर चर्चा की और बताया कि इन मंदिरों का साहित्य पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव है। उन्होंने हिंदी भाषा की अद्वितीयता और ब्रजभूमि के सांस्कृतिक विविधता को महत्त्वपूर्ण माना। **अहसास** वूमेन लखनऊ दीपा मिश्रा ने आभार व्यक्त किया।

Harisingh Pal

Prabhat Kumar

बुंदेलखंड की सर्जनात्मक भूमि

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के दूसरे दिन **'बुंदेलखंड की सर्जनात्मक भूमि'** विषय पर एक महत्त्वपूर्ण सत्र में पुनीत बिसारिया, रजनी गुप्त और दीपा मिश्रा ने संवाद किया। इस दौरान उन्होंने बुंदेलखंड की सर्जनात्मक और सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त, झांसी की रानी और बुंदेलखंड की नारियों की भूमिका पर चर्चा की।

पुनीत बिसारिया ने बुंदेलखंड की समृद्धि और समरसता के सकारात्मक पहलुओं पर गहरा विचार व्यक्त किया और इस भूमि को विशेष बनाने वाले विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों को मुख्य रूप से उजागर किया। रजनी गुप्त ने बुंदेलखंड की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत पर ध्यान केंद्रित किया और उसके महत्त्वपूर्ण घटकों के बारे में चर्चा की। इस सत्र में **अहसास** वूमेन लखनऊ दीपा मिश्रा ने वक्ताओं का आभार व्यक्त किया और संवाद में योगदान के लिए सभी की सराहना की।

> साहित्य में बुंदेलखंड की सर्जनात्मक और सांस्कृतिक विविधता का विशेष स्थान

Rajni Gupt

Deepa Mishra

Puneet Bisaria

भोजपुरी की समृद्ध परंपरा और भविष्य

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के दूसरे दिन **'भोजपुरी की समृद्ध परंपरा और भविष्य'** विषय पर आयोजित सत्र में राजेश राज, सूर्य देव पाठक, चितरंजन मिश्रा और अभिजित शुक्ल ने चर्चा की। वक्ताओं ने सत्र में भोजपुरी साहित्य, कला और सांस्कृतिक परंपरा के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर विचार किए।

राजेश राज ने भोजपुरी साहित्य की समृद्धि और भविष्य की दिशा में अपने विचार साझा किए, सूर्य देव पाठक ने भोजपुरी बोली की व्यापकता और महत्त्व को उजागर किया, चितरंजन मिश्रा ने साहित्यिक परंपरा की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर गहरे विचार किए और अभिजित शुक्ल ने कविता, साहित्य और देहाती जीवन के संबंध पर अपने दृष्टिकोण साझा किए। सत्र के अंत में **अहसास** वूमेन लखनऊ दीपा मिश्रा ने सभी विद्वानों का आभार व्यक्त किया।

> भोजपुरी साहित्य, कला और सांस्कृतिक परंपरा की व्यापकता और महत्त्व उजागर है

Chitranjan Mishra

Surya Dev Pathak

Rajesh Raj

Abhijeet Shukla

प्रदीप नाथ त्रिपाठी की कठपुतली प्रस्तुति 'गुलाबो सिताबो'

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के दूसरे दिन **'गुलाबो सिताबो'** सत्र में प्रदीप नाथ त्रिपाठी ने अपनी कठपुतली कला का प्रदर्शन करते हुए साबित किया कि हमारी संस्कृति की महत्ता कभी भी कम नहीं हो सकती। त्रिपाठी ने इस सत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए गुलाबो सिताबो नृत्य की अद्भुत प्रस्तुति दी। उन्होंने अपनी कला के माध्यम से समाज की वास्तविकता और सांस्कृतिक विरासत को बखूबी साझा किया।

त्रिपाठी ने दिखाया कि संस्कृति एक जीवंत, रंगीन और सामाजिक विरासत है जो कला के माध्यम से हमें समझाई जा सकती है। उनका प्रदर्शन साहित्यिक और कलात्मक दृष्टिकोण से समृद्ध था और दर्शकों में सांस्कृतिक गर्व का अनुभव हुआ। गुलाबो सिताबो सत्र ने नृत्य, संगीत और कला के माध्यम से हमारी सांस्कृतिक धरोहर को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रदर्शित किया और लोगों को इसे महसूस करने के लिए प्रेरित किया।

> संस्कृति एक जीवंत, रंगीन और सामाजिक विरासत है जो कला के माध्यम से हमें समझाई जा सकती है

Pradeepnath Tripathi

Pradeepnath Tripathi's fellow puppeteer weaves his magic

कहां से कहां पहुंचा भोजपुरी सिनेमा

प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा आयोजित **'आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव'** में **'कहां से कहां पहुंचा भोजपुरी सिनेमा'** विषय पर संजय पांडेय और मनोज राजन त्रिपाठी ने महत्त्वपूर्ण चर्चा की। इस सत्र में उन्होंने भोजपुरी सिनेमा के विकास, उसकी सफलता के क्षेत्रों और इससे जुड़े अनुभव साझा करते हुए आधुनिक चुनौतियों का सामना कैसे किया जा सकता है, इस पर विचार किया।

संजय पांडेय और मनोज राजन त्रिपाठी ने बताया कि भोजपुरी सिनेमा कैसे समझदार और उत्कृष्ट रूप से विकसित हुआ है और इसने अपनी पहचान बनाने में कैसे सफलता प्राप्त की है। उन्होंने भोजपुरी सिनेमा की विशेषताएं, अच्छे कलाकारों का योगदान और नई तकनीक का सही उपयोग करने का महत्त्व भी बताया।

> भोजपुरी सिनेमा, समझदार और उत्कृष्ट रूप से विकसित हुआ

Manoj Rajan Tripathi

Sanjay Pandey

A packed audience listens

राग दरबारी के नाम दास्तानगोई

आखर उत्तर प्रदेश महोत्सव' के दूसरे दिन का एक सत्र दास्तानगोई 'राग दरबारी' के नाम रहा, जिसमें महमूद फ़ारूक़ी और दारैन शाहिदी ने उर्दू कहानी कहने की कला से सबका दिल जीत लिया। इस सत्र में उन्होंने १३वीं सदी में उर्दू कहानी कहने की शैली के महत्त्वपूर्ण पहलुओं की विवेचना की और २००५ में उर्दू कहानी के पुनर्जीवन के विषय में अपने विचार साझा किए।

महमूद फ़ारूक़ी और दारैन शाहिदी ने दरबारी रागों के साथ श्रीलाल शुक्ल के कालजयी उपन्यास 'राग दरबारी' की कथा का बखूबी मंचन किया और उनके द्वारा चित्रित किए गए चरित्रों के माध्यम से उस कालखंड और उसके मर्म को जीवंत कर दिया।

> १३वीं सदी में उर्दू कहानी कहने की शैली के महत्त्वपूर्ण पहलुओं की विवेचना के साथ राग दरबारी की कथा का बखूबी मंचन

Darain Shahidi and Mahmood Farooqui perform

Kanak Rekha Chauhan and Deepa Mishra felicitate Mahmood Farooqui and Darain Shahidi

Prabha
प्रभा

आखर
अपनी भाषा अपने लोग

बंगाल

भाव, संवेदना और जीवन रंगों से सराबोर रहा पूर्व पश्चिम रंगमंच महोत्सव

Soumitra Mitra

Debshankar Halder

Meghnad Bhattacharya

यह **पूर्व पश्चिम रंगमंच महोत्सव** का 14वां संस्करण था। **चलचित्र रंगमंच** के तत्वावधान में **संस्कृति मंत्रालय,** भारत सरकार और **प्रभा खेतान फाउंडेशन** के सहयोग से इस छह दिवसीय रंगमंच महोत्सव का आयोजन हुआ। यह रंगमंच महोत्सव स्वर्गीय गौतम हलदर, उस्ताद राशिद खान और श्रील मजूमदार की स्मृति में समर्पित था। वे समूह का अभिन्न अंग रहे हैं, जिन्होंने अपने जीवनकाल में अपने रचनात्मक सोच के साथ बहुत बड़ा योगदान दिया है। नाट्य समूह ने संस्थापक और निर्देशक सौमित्र मित्रा के कुशल मार्गदर्शन में यह महोत्सव आयोजित किया, जो फाउंडेशन से बांग्ला भाषा, रंगमंच और फिल्मी कार्यक्रमों के सलाहकार के रूप में भी जुड़े हैं। कोलकाता के साहित्यिक और सांस्कृतिक जगत से जुड़े उत्साही लोगों ने दर्शकों की भारी प्रतिक्रिया को प्रोत्साहित करते हुए विभिन्न स्थानों पर नाट्य प्रस्तुतियां और कार्यशालाओं का आयोजन किया।

पूर्व पश्चिम रंगमंच महोत्सव की शुरुआत बांग्ला रंगमंच के जनक गिरीश घोष की जयंती से हुई। इस अवसर पर गिरीश घोष को याद करते हुए उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई। उद्घाटन कार्यक्रम के मौके पर पहला नाटक 'पातालबाबू फिल्मस्टार' था। प्रसिद्ध अभिनेता संजीव सरकार को महोत्सव के पहले दिन *रामप्रसाद बनिक मेमोरियल पुरस्कार* से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अशोक मुखोपाध्याय, मेघनाद भट्टाचार्य, उज्ज्वल चट्टोपाध्याय और देबशंकर हलदर जैसे जाने-माने रंगकर्मी मौजूद थे। महोत्सव का दूसरा दिन रवींद्र सदन में आयोजित किया गया। *नैहाटी नाट्य समन्वय समूह* का नया नाटक उत्पल दत्त के 'फेरारी फौज' को दर्शकों से भरे खचाखच सभागार में पूरे उत्साह के साथ प्रदर्शित किया गया। महोत्सव के अगले तीन दिनों में ललित कला अकादमी में कुछ अद्भुत नाट्य प्रस्तुतियों का मंचन किया गया। इसके परिसर में एक खूबसूरत प्रदर्शनी भी लगाई गई थी, जिसमें *पूर्व पश्चिम* की शानदार 20 साल की यात्रा प्रदर्शित की गई थी।

नाट्य प्रस्तुतियों में बंगाल और भारत के सांस्कृतिक प्रेमियों, दिग्गजों के साथ *पूर्व पश्चिम* के जुड़ाव की फाइल तस्वीरें आंखों को सुकून देने वाली थीं, साथ ही कोलकाता महानगर की कला और संस्कृति की समृद्ध विरासत को भी सबके सामने लाने वाली थीं।

दक्षिण दमदम संस्कृति चर्चा केंद्र प्रोडक्शन और सुदीप सिन्हा द्वारा निर्देशित नाटक 'बड़बोन', पृथ्वीश राणा द्वारा निर्देशित, *इछेमोतो प्रोडक्शन* और माइकल मधुसूदन दत्ता द्वारा निर्देशित प्रतिष्ठित नाटक 'बिरंगना काव्य', त्रिना दाश द्वारा निर्देशित, *नबामायुख प्रोडक्शन* 'एखुन ओ अंधोकार', ऋषि मुखर्जी द्वारा निर्देशित और गौतम हलदर द्वारा नए *नटुआ प्रोडक्शन* 'काव्य गाने' का लाइव प्रदर्शन, साथ ही *पूर्व पश्चिम* के अपने प्रोडक्शन और सौमित्र मित्रा द्वारा निर्देशित 'जोछोना कुमारी' और 'एक मंच एक जीवन' ने आगंतुकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पूरा महोत्सव मानवीय संवेदनाओं, उसके भावों और जीवन के रंगों की गाढ़ी रंगत लिए हुए था, इसीलिए यह दर्शकों की स्मृतियों में लंबे समय तक बसा रहेगा।

कार्यक्रम का समापन तृप्ति मित्रा नाट्य गृह, पश्चिमबंग नाट्य अकादमी में प्रख्यात रंगकर्मी सुबोध पटनायक की उपस्थिति में रंगमंच कार्यशाला के साथ हुआ। इस कार्यक्रम को **श्री सीमेंट लिमिटेड** द्वारा उनकी सीएसआर पहल के रूप में आयोजित किया गया, जिसे **पूर्व पश्चिम** और **संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार** का सहयोग मिला।

The play, *Badabon*, centred on the refugee crisis in the Sunderbans in Bengal (Photo credit: Papan Ghosh)

Participants take part in a group activity geared towards understanding how art is the practice of being perfect

The play, *Jochona Kumari* (Photo credit: Papan Ghosh)

Gautam Halder

Chhanda Chatterjee in *Patol Babu, Film Star*, a play that Ramaprasad Banik had directed in his lifetime, the original story of which had been written by Satyajit Ray (Photo credit: Papan Ghosh)

Sanjib Sarkar accepts the Ramaprasad Banik Memorial Award from Jiban Kumar Sen

Visitors browse through the books at the exhibition

Subodh Pattanaik

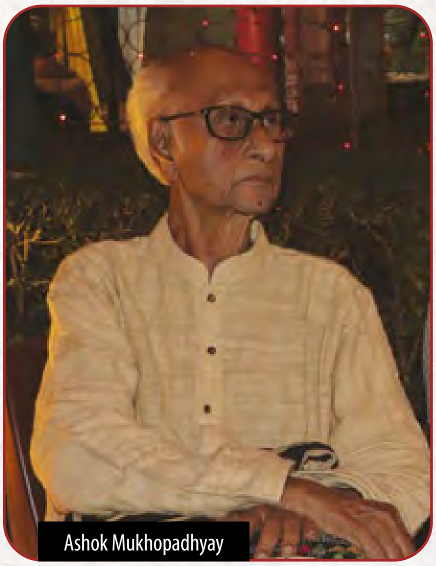

Ashok Mukhopadhyay

Bibhas Chakraborty

अपनी भाषा अपने लोग

Handscripted by Paresh Maity

Prabha
प्रभा

लोक साहित्य में लोक मानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती गुनगुनाती है।

लोक जीवन में पग पग पर लोक संस्कृति के होते हैं दर्शन ।

– अज्ञात

supported by

Shree Cement

as their CSR initiative

The digital version of the newsletter is available at pkfoundation.org/newsletter

newsletter@pkfoundation.org

prabhakhaitanfoundation

For private circulation only